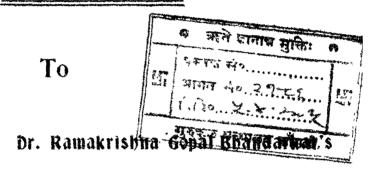
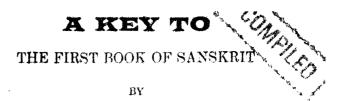
# A Key A



# First Book of

Sanskrit

Price 6 As.



#### DR. RAMAKRISHNA GOPAL BHANDARKAR, M. A. PH. D. &c., &c.

BY

#### A. R. GANAPATHY SASTRI,

LATE SANSKRIT PANDIT, TRIVANDRUM.

(Third Edition, --1000 COPIES.)

PRINTED AND PUBLISHED

K. NARAYANA AIYENGAR,

PROPRIETOR.

BHASKARA PRESS.

1909.

(Registered.)

[Price 6 annas.]

PRINTED AT THE BHASKARA PRESS,
TRIVANDRUM.

### **PREFACE**

#### TO THE FIRST EDITION.

These notes were originally prepared for the use of my classes; and at the request of my pupils and friends, I now make bold to bring them out in their present printed form. A teacher of several years' standing in a recognized High School I have found these notes useful to my boys. Though I cannot claim any originality in the compilation of the present work, I may say that, as a Key to that excellent and admirable work of Dr Bhandarkar's, which, while it avoids the time-honoured system of making the boys cram the technical rules and Sutras of Laghukaumudi and Siddhantakaumudi, which are but imperfectly understood even by adults, clearly lays down a Scientific Study of Sanskrit Grammar and elucidates in a succinct and vivid form the various points of difficulty, these notes, so far as they are intended for young boys who have been just initiated into the study of Sanskrit, have been fully appreciated by them.

Apart from being a mere companionbook to the first Work of Sanskrit, without which the presnet work would, never have seen the light, it also contains a list of the most difficult and irregular forms of Inde. post and present proceedings of verbs ordinarily met with in standard works of Sanskrit. I hope that, as great difficulty is experienced by boys in finding out the proper participal forms which are useful in translating passages from English into Sanskrit this list too will be found to be of some use.

## ॥ विज्ञप्तिः ॥

विदितं खल्वेतद्यद्रमाभिः सर्वेरिष भारतीयेविशिष्य दाक्षिणा-त्यैः प्रतिकलं नुतयो नतयश्च समर्प्यन्ते पण्डितवराय पुस्तकरत्नभा-ण्डागारद्वयदापनेनाम्माननुगृह्णतेऽस्मे भाण्डारकरकुल नलिधसुधाकराय श्रीरामकृष्णायीयेति. एवं मार्गोपदेशिकयानुरूपाह्वया सरलीकृतेवै-षार्यभाषेत्येनं बुधमणिं स्तुवीम इति याधातथ्यं मुहुर्विवक्षुं मां पिष्ट-पेषणन्याय एव न सम्मनुते; अथापि—

> निस्सापत्न्यममन्द्मोदतृषिता होणी गुणैश्शोभिता गैर्वाणीव सुशब्दसौष्ठवयुतालङ्काररीत्युज्वला । लक्ष्मीपूर्वपरित्रहं कविवरं यं प्रीणयत्यादरा-त्सोऽसौ सर्वसमेक्षणो विजयते श्रीरामकृष्णोऽतुलः ॥

यो भारतीयद्यया सुरभारत्याः प्रचारमातेने । सोऽघः कृतभारव्यादिमनीषो जयति लोकनुतः ॥

षेक्सिफयर्कालिदासाम्यां यं वरं ब्रुवते जनाः । तस्य स्तवेऽस्मि किं शक्तो नाहं शेषो न गीप्पतिः ॥

तत्ताहशस्यास्यानुकम्पयाधुना ब्राह्मणाः श्रृद्धाः कैस्तवाश्च स्वोपभाषा- स्वेन संस्कृतभाषां पठन्तीति पृथितमेव, अस्मन् दक्षिणप्रदेशे भाषा-

न्तरेणेदमनुभूयतेः- भिन्नजातीया बालकाः संस्कृतपठनाय प्रथमं यत-न्ते. अनन्तरन्तु मध्ये मध्ये कारणगौरवात्पाठालयं नायान्ति ; पश्चा-दागच्छन्तोऽमी निर्दिष्टपाठाध्ययनानन्तरं पृच्छ्यमानेष्वतीतपाठस्थे-षु वाक्येषु तत्तत्पाठप्रतिपादितप्रातिपदिकार्थिलिङ्गविभक्तिवचनान्यजा-नन्तस्सन्तस्तानि वाक्यानि भाषन्तरीकर्तं न शक्नवन्तिः नन् पृथः गेव पाठ्यन्तामीदृशा इति चेत्सत्यं; एकैकस्मिन्नंशे बहुवा माणवका विजयैषिणः पठन्ति. तत्रानागतवारुविषयः पाठः, तद्यतिरिक्तविषयः पाठ इति बहुधाध्यापनस्यावकाशो दुर्लभे अवति घटिकामात्रपरिमि-तत्वादध्यापनसमयस्य. किन्त्वतीतपाठानधीत्यागम्यतामित्यादिश्यमा-नेषु तेषु, कथमन्यसहायं विना संस्कृताध्ययनमपि घटत इति मन्दं मन्दं जल्पन्ति. अनन्तरञ्चेदृशा बालकाः स्वभावसरलामनिर्धारिता व्याकरणां परिचितपूर्वोच्च केरलादिभाषामुपसर्जनत्वेन स्वीकृत्य मोमु-अतो ल्यीयसीयं देशभाषायभाषायचारकण्टकीमृता सर्ता गैर्वाणीप्रियालुभ्योऽस्मभ्यं व्यसनं न प्रयस्छतीति न. किञ्च बालका द्वादशसंस्करणेऽङ्कितां मार्गोपदेशिकां पश्चशताधिकवाक्यरलेभेषितामी-षद्यञ्जितबृंहणां मत्वा तां वशीकर्तुं शङ्कन्ते. तथाचाधुनिका मदन्तेवा-सिनोऽन्ये चार्यभाषासुहदो मार्गोपदेशिकाया अवगमे किञ्चिद्ज्ञमपि मां साहाय्यमाचरितुमचृचुदन् . गैर्वाणीपक्षपातिना मया चेयन्तं कालं तिद्वषये पाठ्यमाना रीतिस्तदुपकाराय मुद्रियतुं निश्चिता. अतेऽत्र-

१. प्रकृतचतुर्दशसंस्करणे न कोऽपि भेदः.

त्यबालसहायमात्रकुतुकस्यार्थभाषाकुण्ठनभिरोमेमात्रत्यान् मन्तृन् क्षन्तुं सिवनयं प्रार्थये. अपि च युगधर्मेण मध्ये निरुद्धप्रचारां गैर्वाणीं हो-णीसन्धिना दक्षिणसीमप्रदेशेऽपि विहारयन्तं श्रीरामकृष्णार्थमायु-प्मन्तं कारियतुं परमकारुणिकं विश्वेश्वरं प्रार्थयतेऽयं द्विजः.

श्रीमद्भिमहीश्वरीप्रियतमश्रीराजराजादत-क्षेमालोकनवर्षमानविश्वद्याने कलामन्दिरे । रीति यामनुस्त्य शिष्यनिकरास्मम्पाठिताः प्रागितः सेषा च्छात्रसृहत्यणुक्षमनसा नीताद्यमुद्रां मया ॥

आ० रा० ग.

## ॥ श्रीः ॥

## LESSON I; Page 5.

| (I) Speak.<br>(Thou) prote<br>(He) falls.<br>(Thou) know<br>(Thou) move | $\frac{1}{1}$ vest. $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{1}$ | a) dwellest<br>ove.<br>goes.       | (He) leads. (I) understand. (He) or she or it is. (He) eats. (It) is.   |
|---|---|------------------------------------|---|
| बद्धिः<br>बद्धिः<br>गच्छसिः<br>गच्छामिः                                 | वसतिः<br>वसामिः<br>पतिसः<br>चरसिः   | बोधित.<br>नयसिः<br>सरतिः<br>भवामिः | अस्मि $_{\mathrm{or}}$ भवामि असि $_{\mathrm{or}}$ भवसि $_{\mathrm{or}}$ |
|   | ]   | Page 6.                            |   |
| र्जीवति.<br>त्यमाति.  | नमितः<br>पचामि<br>पचितः<br>LE   | दहिंस.<br>रक्षामि.<br>SSON 11      | चरतिः<br>जीवामिः<br>त्यजामिः  |

| (We) speak.<br>(They go for know.<br>(You) understand (You) are.<br>(They) dwell. | (You) are. (They) eat. (We) burn. |
|---|-----------------------------------|
| Page 7.   |                                   |

(They) are. [ (You) live. [ (They) salute.

## Page 7 continued.

| (We) nourish. (They) perish. (You) dance. (We) faint. | (They) covet. (We) touch [create (You) abandon or (They) wish. | (We) leave.      |
|---|--|------------------|
| वद्थ.   | जीवथ.  | पिचामः.          |
| गच्छामः.  | पुष्यन्ति.   | यज्ञथ.           |
| बोधन्ति.  | नइयामः.  | वहन्ति.          |
| नयथ.  | नृत्यन्ति.   | स्मरामः.         |
| भवन्ति $_{ m ar}$ सन्ति.                              | मुह्यथ.  | अस्यथ or क्षिपध. |
| वसामः.  | <b>लुम्याम</b> ः.  | कुस्यन्ति.       |
| अत्थ.   | स्पृशन्ति.   | तुप्यामः.        |
| स्मः or भवामः.  | जयामः.   | शुप्यन्ति.       |
| दहन्ति.   | हर्थ.  | लुख्यथ.          |
| जी <b>वा</b> मः.                                      | पश्यन्ति.  | सिश्चथ.          |
| तुदन्ति.  | अस्यामः or क्षिपामः.   | 1                |

## LESSON III; Page 8.

|                  | (You two) proclaim.     |                  |
|------------------|-------------------------|------------------|
|                  | (We .,) desire. [plate. |                  |
| (They ,, ) tell. | (They ") contem-        | (We ") remember. |
| (We ,, ) count.  | (You ") please.         |                  |
| (We , ) publish. |                         | They ") perish.  |
| They ") arrange. |                         | (We ") dance.    |
| (We ") eat.      | (They ") enter.         | (They ") wish.   |

Page 9.

| चोरयथः. | । पीडयतः. | । कथयावः. | ।गणयथः. |
|---------|-----------|-----------|---------|
|         |           |           |         |

### Page 9 continued.

| पर्यथः.    | कुप्यथः.                | जल्पतः.      | तुप्यावः. |
|------------|-------------------------|--------------|-----------|
| रचयावः.    | कृपतः.                  | सान्त्वयतः.  | लुभ्यथः.  |
| स्पृह्यथः. | पूजयातः.                | शंसावः.      | छुट्यतः.  |
| घोषयतः.    | अटथः.                   | वद्थः.       | स्पृशावः. |
| चिन्तयावः. | क्षुम्यथः.              | भवतः or स्तः | पृच्छथः.  |
| प्रथयथः.   | उञ्छावः.                | पचथः.        |           |
| भीणयतः.    | वर्णयतः.                | बोधावः. 💮    |           |
| निन्दावः.  | श्चि <sup>ए</sup> यावः. | अत्तः.       |           |

| LE   | SSON IV; Page  | e 10.  |
|--|--|--|
| understand. (He) protects. (I) fall (They) lead or carry. (You two) eat. (They) are. (Thou) perishest. (He) dances. (We) enter. (You two) ask. (He) faints (I) wish. [lease. (You) leave, or re- | (You) praise. (Thou) beatest. (They) grow. (They) adore. (1: stand. (You) desire. (He) washes off. (They) two waste. | (You two) abandom. (They) cook. (I) nourish. (They two) take. (Theu) conquerest. (They) drink. (We two) see. (He) calls. They) give pain to (We) worship. (I am) weary. (You) proclaim. (He) counts. (We) plough. (They) are wet (He) co itemplates. |
| पुष्यति. हिम्ब<br>नृत्यामि. विशा   |  | पीडयसि.<br>रोहात.  |

## Page 10 continued

|  | Page 1      | 0 continu | ied.  |          |
|--|-------------|-----------|-------|----------|
| ह्यामः.  | श्राम्यासि. | क्षयति.   |       | घोषयाति. |
| मुखाति.  | इच्छामि.    | कथयात     |       | स्मरामि. |
| <b>बुप्यन्ति</b>   | पिबावः.     | तोलयात    |       | वसतः.    |
| जयामि.   | दहथ.        | चोरयन्ति  | ₹.    | हरामः.   |
| गच्छथ.   | क्षालयन्ति. | रचयथ.     | 1     |          |
|  | Pa          | ge 11.    |       |          |
| कथयथ.  | चोरयति.     |           | ताडय  | ਵਿਕ<br>ਜ |
| स्पृशीस.   | भवावः о     |           | पचाव  |          |
| स्पृहयन्ति.  | प्रीणयसि.   |           | पूजयश |          |
| गच्छथः.  | विशामि.     |           |       |          |
| (1)  | Page 12,    | , answer  | ·s.   |          |
| $\left\{ egin{array}{ll} (a) & oldsymbol{a}, \ (b) & oldsymbol{	au}, \end{array}  ight.$ | ख्;         | ग् ,      | घ्;   | ङ्       |
|  |             | ज्,       |       | ` 1      |
| (७) ट्,  |             | ख्,       | ढ्;   | - 1      |
| <sup>(d)</sup> त्,   | थ्;         | द् ,      | ध्;   | न् }     |
| (e) <b>प्</b> ,  | **          | ब् ,      | भ्;   | म्       |
| श्, ग  | र्, स्,     | (f) य् र् | ्, ऌ  | व्       |
| h .  | •           |           | ह्    |          |
| h.   |             |           | g     | <i></i>  |
|  |             |           |       |          |
|  |             |           |       |          |

Page 12 continued.

|     | Vowels |         | Guna    |         | Vridhi |
|-----|--------|---------|---------|---------|--------|
| (a) | इ      |         | ए       | * * * * | ऐ      |
| b)  | उ      | • • • • | ए<br>ओ  | ••••    | औ      |
| c   | 粥      | ••••    | अर्     |         | आर्    |
| d   | ऌ      |         | 📗 अર્જ્ | ••••    | आल्    |

- (3) (a) अ, (b) य, (c) अ, (d) अय, (e) none.
- Singular. Dual (4)Plural. मि वस् मस् 1st Person सि थम् थ. 2nd ति आन्त. तस 3rd
- (5) It is lengthened; as, नय+मि = नयासि.
- (6) They become अय् अव् आय् and आव् respectively when followed by a vowel: as, हरे + ए = हरये । नै + अकः = नायकः । पो + अकः = पावकः etc.
- (7) It takes the first letter of its class; as, अड् + सि = अत्सि and अड् + थः = अत्थः etc.
- (8) They are changed to a visarga; as, रूप + स् = रूप:, पुनर् becomes. पुन:
- is changed to a visarga, when it is followed by a hard consonant or by nothing.

#### Page 12 continued.

(9)S. **D**. D. 
 1st pers.
 अस्मि स्वः स्मः.
 आग्नि अद्वः अग्नः.

 2nd pers.
 अस्ति स्थः स्थः
 अत्ति अत्थः अत्थः.

 3rd pers.
 अस्ति स्तः सान्ति
 अत्ति अत्तः अदन्ति.
 <sub>3rd pers.</sub> अस्ति

#### LESSON V; Page 15.

A king conquers. Two horses gallop. Men speak. A child desires. Houses protect. Two eyes see. A cloud sprinkles. The wind blows.

Happiness pleases. An animal faints. The two hands take Two fruits fall. away. Mouths are wet. Misery gives pain. Rama adores. Two wise men leave. Two sons are pleased A cook enters Water dries.

Two fools get anger? A tortoise moves: Wealth perishes. Men go. Two lotuses dance Friends tell. The sea is calm

## MA: WA: Page 16.

नृपा रक्षन्ति. बाली लुट्यतः. पुत्रः प्रीणयति. अश्वा उत्पतानि. पवना वहन्ति. इश्वरः सज्जति. बुक्षा रोहन्ति.

जीवा नश्यन्ति. हस्तः क्षिपति. अनलो दहति. नेत्रं स्फुरति. समुद्री क्षुभ्यतः. उपः शाम्यति. मृशी जल्पन्ति.

पर्णाने पतन्ति. हृदयं तुष्यति. सुदाः पचन्तिः जना निन्दन्ति. नरः कथयाते. कमलं भूषयति. मुखं वदति.

#### LESSON V; Page 17.

The ocean is agitated. Monkeys throw.
Two sages contemplate. An enemy gives pain.
Two hands take away.
A king worships.
Waters dry.
Fire burns.

Poets praise.
There is no water.
A mountain bears.
Diseases perish.
Indra's thunderbolt falls.
Swords fall.
Two ascetic contemplate.

घूर्जटी रक्षति.
र ऋषयः शाम्यन्ति.
कपयो धावन्ति.
कविर्वणयति.
नृपतयो नयन्ति.

अमी शाम्यतः. व्याधिः पीडयति. यतयो न स्पृह्यन्ति. असिः पति. अरी जयतः. हरिः कुप्यति. पाणिः सिश्चति. गिरिस्तिष्ठति.

**48**: 418

LESSON VI; Page 19.

People adore God.
A king punishes rogues.
Rama ascends a horse.
A tiger eats a flesh.
Hari washes off his two hands.
A warrior throws arrows.
He covets wealth.
A thief steals corn.
I go to the town.
Thou speakest a sin.
Thou rememberest thy friends.
A wise man desires for absolution.

Diseases give pain to men. You drink water. A poet praises two wise men. A son appeases his father. I seek my book.
We weigh gold. [villages. We two wander through I eat two fruits. He sees lotuses.
A servant bears the burden. People extol wise men [cloths. A fool abandons his two A horse eats grass.
An ascetic leaves his tody. A man beats cats. We enter the house.

## षष्ठ: पाति: Page 20.

रामो व्याघान् पश्यति.
अश्वाः कोशं वहान्ति.
बुधः स्वर्गमारोहति.
सिंहा गजानदन्ति.
फल्लानि गणयति.
यतिररण्यं गच्छति.
योधः शरौ शिपति.
ईश्वरो जनान् रक्षति.
प्राप्ते विशामः.
पुत्रो जनकं प्रमिधिति.
नराः क्ष्मीनदन्ति.
कपयो वृक्षानारोहन्ति.
भृत्यान् प्रच्छति.

पादान् क्षालयन्ति.
मूर्वी विषं पित्रतः.
नृपाः स्तेनान् दण्डयन्ति.
पुस्तकानि रचयन्ति.
ओदनमत्थ.
मित्राणि रामं म्मरन्ति.
जना नृपान् शंसन्ति.
बुधा जनान् नयन्ति.
तत्त्वं बोधामि.
वेदाः सूर्यं शंसन्ति.
जनको बाल्याह्यित.
मूर्वीः प्रज्ञान् निन्दन्ति.
नृपतियोधं वदति.

#### Page 21.

A crow eats oblation.

A king conquers his enemies.
Disease gives pain to Hari.
A cloud sprinkles water.
A lotus pleases bees.
Rama salutes the sun.
We wash our hands.
Warriors bear swords.
I leave a monkey.
Poets extol their king.
A thief steals the jewel.

Servants follow their masters. We two go to the ocean. We salute two sages A tiger eats boars. We call the charioteers. God conquers fate. They two carry a heap. A mendicant gleans com. They ascend two mountains. People adore the poet.

#### Page 22.

The pupil ask the ascetic.

I do not care for disease.

## Page 22 continued

The Brahmins adore their guests. A wise man does not rejoice at a quarrel.

कवयः ऋषीन शंसान्त. रामः कवीन नमित. यतिर्गिरिं गच्छति. कपी ताडयामि. हरी राशीनानयति. पाणि स्प्रशति. अगदा व्याधीन हरान्ते . व्याधः किरी पश्यति. हरिरिरं ताडयति.

योधोऽसिं क्षिपति. मणीन स्पृहयामि. उदधीनटति. नरोऽभ्रिं विज्ञति. सारथी प्रच्छति. जना नृपतीन् प्रीणयन्ति नृपतयोऽपि यतीन नमन्ति. अश्वा जलं पिबन्ति. नरा बलीन यच्छन्ति.

#### LESSON VII; Page 24.

A man beats a thief with a He washes (his) two hands stick. ornaments. He adorns his body with Sailors enter the sea along the f with arrows. river. A warrior conquers his enemy He is lame of one foot. Hari goes to the village with of two wheels. his sons. The chariot moves by means He digs with a spade. Rama adores the sage with materials of worship. verses. Poets describe their king by Wise men live with (in) happiness. Man see, with two eyes,

with water. two hands. He touches the head with his A lion tears elephants with his nails. He burns the house by fire. A wise man knows the truth from the Sastras. Isoldiers. A warrior goes with foot-Children run with their feet. He sees Hari by virtue. Hari calls Rama with hands. Rama conquers Ravana by monkeys. I am Kousika by family. An animal faints with pain He cooks rice with fuel

#### Page 24 continued.

रामो मणिभिः शरीरं भूषयति. नरा मुखेन वदात.

जना अन्नेन शरीराणि पुष्यन्ति.

#### Page 25.

भारान् शीर्वैर्वहन्ति. हरियंत्रेऋषि प्रीणयति. नृपा उपहारैस्तुप्यन्ति. रथा यतैश्वलन्ति. ब्राह्मणाः सूक्ताभ्यामीश्वरीमाह्य-विधिनेश्वरं यजन्ति. श्लोकाभ्यां रामं शंसति. नरोऽरिं असिना ताडयति. रामः सारिथना गच्छति. कासारः कपले विराजति. प्रभूतरिप मणिभिजेना न तुष्यन्ति.

रथेन ग्रामं गच्छामः. बिहिमिरीश्वरान् प्रीणयति. व्याघ्रो मांसेन जीवात. हृदयेनेश्वरं चिन्तयति. इन्द्रः पविना गिरीन् प्रहरति. वक्षा वारिणा रोहन्ति. कपयः फलेस्तुप्यन्ति. वसन्तः पर्णेवृक्षान् भूषयति. आतमेन कासाराः शुप्यन्ति. भारेण शीर्षमवनमति.

#### LESSON VIII; Page 28.

Hari gives golden coins to Preceptors get up from their Brahmins. A man goes to a village. [fare. He worships Hari for his wel-I go for fruits. A king gets angry with Hari. A child desires sweetmeats. He comes from the town. He falls from the horse. He gives food to guests. He exchanges the kinds pulse for sesamume.

seats. [calm without killing. An enemy does not become People obtain bappiness from the sun. his palace. A king sees his people from He teaches science to his pupil. Miseries are produced from quarrels. Elephants fall from the top. of A caravan rambles from island to island,

#### Page 28 continued.

Rama beats his servants by Hail to Harianger. The town is eight miles from the forest. Bow to gods.

The hogs get up from puddles. Modesty is for happiness. Hari owes golden coins Rama.

#### Page 29,

रामो भोजनाय गृहं गच्छति. फलानि वृक्षेभ्यः पतन्ति. याचकेभ्यो धनं यच्छामि. हरिरश्वपतये शतं धारयति. इश्वरं बुधो मोक्षाय यजित. सेनापतिः सैनिकान् यामाद प्रामं नगति. ब्राह्मणा नृपेभ्यो धनमधिगच्छन्ति. गिरिः सगुद्रात् कोशयोः (क्रीफ्री) हरिः कुसुमेभ्यः उद्यानं गच्छति. दःखं पापादुद्धवात. देवाः पापान् स्वगोत् क्षिपन्ति. रामः स्वकृत्येभ्यो माद्यति. राशिभ्यां तण्डलमानयति.

आचार्येभ्यः शिप्याः ज्ञानमधि गच्छिहित. नुपा अरिभ्यो राज्यानि रक्षन्ति. सिंहासनात् सेनापति नपतिः वदाति. जाड्यात् पदमपि न चलति. विनयेन मुकस्तिष्ठतिः उद्यानात् प्रत्यागच्छामि. कृषीवला धान्याय क्षेत्रं कृषितः पुत्रा जनकाहृत्यमधिगच्छति. मृखा अज्ञानेन जल्पन्ति. वराहाः कासाराज्जलं पिनन्तिः आकाशात् तारकाणि पतन्ति. कविभ्यः स्वस्ति,

#### LESSON IX; Page 32.

King is the protector of men. An ocean is the store of The water of the sea is salt. I live by the grace of God. A wise man knows the truth of sciences. There is a fight between two Lotuses are produced in warriors.

waters. They sit on their seats. A bullock falls from the top of a mountain.

#### Page 32 continued.

A herd of elephants goes. The light of the sun becomes hot in summer. Among castes the Brahmana is the best. authority. The saying of Rishis is The conduct of the rogues is censurable. Poets publish the exploits of warriors in the world. Where is Hari's book? People dwell in the town. Rama's sons go to the village. There are beasts of prey in forests.

Preceptors tell (preach) virtue to their pupils.

Diseases of men perish by medicine.

Rama's charioteer Sumantra, leads the chariot to the forest. [lightful to men. The light of the moon is de-Lions dwell on mountains.

A king conquers the armies of enemies [of the warrior. There is a sword in the hand Mind of ascetics is on the god

#### Page 33.

Siva.

हरेः पुत्रयोराचारः प्रशस्योऽस्ति.
गृहेषु दीपाः सन्ति.
यक्षा धनपतेर्भृत्याः.
कपीनां लाङ्गूलानि दीघीणि.
कवीनां कालिदासः प्रथमः.
नरस्य भृत्यो प्रामं गच्छति
नृपाः प्रासादेषु वसन्ति.
धनिका हम्येषु वसन्ति.
भनिका हम्येषु वसन्ति.
कासाराणां जलं लवणम्.
पर्वतानां शिखरेषु हिममस्ति.
स्तेनो बाह्मणस्य धनं चोरयति.
उद्यानानां सौन्दर्येण तुष्यामि.

वृक्षस्य पर्णमानयाति.
अमो घृतं क्षिपामि. [भवति.
नाविकानां वैरं युद्धस्य कारणं
मूर्वस्य नास्त्यौषधम् .
हरे, जना विनयेन तुष्यन्ति.
मेघा आकारो चलन्ति.
अरण्येषु यतीनां वासः.
उद्देशे मभूतानि रत्नानि सन्ति.
कुसुमान्युद्याने वृक्षान् भूषयन्ति.
बुशो हृदये कोधस्यावकाशं न
प्रयच्छति.
ईश्वरः पापानां पापान् क्षाम्यति.
कमलानि वारिणि प्ररोहन्ति.

### Page 35. (Answers.)

1. (a) When any vowel, short or long, except the last four, is followed by the same vowel short or long, the substitute for both is the same vowel lengthened; as:-

देत्य + अरिः = दैत्यारिः. काव + इंशः = कवीशः.

श्री + ईशः = श्रीशः. न + आगच्छाति = नागच्छाति । विष्णु + उदयः = विष्णुदयः । रमा + अस्ति = रमास्ति । वधू + उक्तिः = वधूक्तिः । बाला + आह = बालाह । होतृ + ऋकारः = होतृकारः ।

(b) If अ or आ is followed by इ, उ, ऋ, छ, short or long the corresponding guna letter is substituted for both; as,

मम + इदं = ममेद्रम् . रमा + इंशः = रमेशः. गङ्गा + उदकं = गङ्गोदकम . तत्र + ॡकारः = तवल्कारः.

रमा + ऊहः = रमोहः. सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः.

(c) If ए, ऐ, ओ or औ follow अ or आ, the vowel which takes the place of both is in the first two cases, and sit in the last two; as,

(d) When হ, হ, হ, or হ, short or long are followed by a dissimilar vowel, य्. ए, ए, or ल्, are respectively substituted for them; as,

इति + आह = इत्याह. नदी + एघते = नदोघते. [स्यश्वः. पितृ + आजितं = पित्रार्जितम्. तृणानि+अत्ति+अश्वः = तृणान्य- लः + आकृतिः = लाकृतिः.

(e) When ए or ओ at the end of a word or grammatical form is followed by अ, the latter merges into the former, and the mark s is generally put in its place; as,

हरे + अब = हरें डव. । गुरो + अब = गुरो डव.

(j) When the dual number of a noun or a verb ends in ই, জ, or ए; these vowels do not coalesce with another vowel following them; as,

गिरी + एतौ = गिरी एतौ.  $\frac{1}{1}$  गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू.  $\frac{1}{1}$  विष्णू + इमौ = विष्णू इसी.  $\frac{1}{1}$  रमेते + इमे = रमेते इमे, for verb.

寒 after any vowel except the last four is optionally not combined, and the preceding vowel if long, is made short; as,

ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः or ब्रह्म ऋषिः.

(g) # at the end of a word or particle etc. Vide page 13 (\*) of the text.

हरिम् + बन्दे = हरिं बन्दे. | राम् + स्मरित = शं स्मरित. | अम् + हो = अंहो. | तम् + करोषि = त्वं करोषि | or त्वङ्करोषि. | सम् + यन्ता = संयन्ता | ल स्पर्यन्ता | etc.

(h) Vide page 21 (\*) of the text. Examples:—

तत् + चिनोति = तचिनोति. प्रासादात् +जनम्=प्रासादाज्जनम्. तत् + शास्त्रं = तच्छास्त्रम् . अरीन् + जयति =अरीञ्जयति etc.

When  $\overline{\eta}$  are the dentals are combined with  $\overline{\eta}$  or the linguals,  $\overline{\eta}$  is substituted for  $\overline{\eta}$ ,  $\overline{z}$  for  $\overline{\eta}$  and  $\overline{z}$ , for  $\overline{\eta}$  etc.

रामस् + षष्ठः = रामप्षष्ठः. । तत् + टीका = तद्दीका. 3z + gan = 3gan = 6

(k) Any consonant of the first five classes, except the last four, followed by a soft consonant or the initial vowel of a word, takes the third consonant of its class as its substitute; as,

तत् + अस्ति = तदस्तिः । वाक् + वैखरी = नाग्वैखरी.

(l)  $\tau$  followed by  $\tau$  is dropped and the preceding vowel, if short, is made long; as,

पुनर् + रमते = पुनारमते. । शम्भः + राजते = शम्भूराजते. हिरः + रम्यः = हिर्रारम्यः.

#### Page 36.

2. 五 coming after 表, Tor u in the same word is changed to U. This change takes place even if a vowel, a semi vowel (except o) the aspirate t or a letter of the gutteral; or labial class comes between

3. When visarya is preceded by अ and followed by अ or a soft consonant, it is changed to उ, which with the preceding अ becomes ओ; as, नृप: + जयति = नृपो जयति. राम: + विराजते = रामो विराजते etc.

When visarga is preceded by any vowel, except अ or आ, and followed by a vowel or a soft consonant, it is changed to र, as, कवि: + अज्ञवीत् = कविरज्ञवीत्. कवि: + वर्णयित = कविरज्ञवीत् etc.

Visarga followed by स, श, or q is either retained or changed to स, श or q respectively; as, क्मं: + सरीत = क्मंस्सरित, बुध: + शाम्यति = बुधदशाम्यति, रामः + षष्टः = रामध्यष्टः.

Visarga is preceded by आ and followed by a vowel or a soft consonant is dropped, and it is also dropped when preceded by a and followed by any vowel except अ; as, सार्था: + आगच्छन्ति = सार्था आगच्छन्ति, भृत्या: + बहन्ति = भृत्या बहन्ति. भिक्षुक: + उञ्छति = भिक्षुक उञ्छति etc.

4. A final म when followed by च, छ, त, थ, इ, इ, is changed into an anuswara and visarga,

ग्रामान् + चरति = ग्रामांश्चरति महान् + टक्कारः = महांष्टक्कारः. नदान् + तरति = नदांस्तरति.

5. (a) Verbs implying motion govern the accusa. and sometimes the dative, of the place to which the

motion is directed; as, मनुष्यो प्रामं or प्रामाय गच्छति.

- (b) Verbs implying anger, malice, rivalry, and jealousy (in the sense of कुन, द्वह, ईच्या, and असूया) govern the dative of the person or thing against whom or which the feeling is directed; as, इरवे नुपति: कुप्यति, महिनी दास्ये कुप्यति, etc.
- (c) ফু in the sense of to owe governs the dative of the person to whom something is owing, as, হবিশ্বে- पतये হাল খাবেলি.

स्पृह् governs the dative of the object of wish, as, भोदकेभ्यो बालः स्पृह्यति.

(d) सह governs the *instrumental* ; पुत्रेः सह पिता

नमः and स्वस्ति govern the dative; as, नमो वासुदेवाय.

विना governs an accusative, instrumental, or ablative, as, जलं, or जलेन or जलात विना दक्षा न प्ररोहन्ति.

- 6. नी, प्रच्छ, and यान् govern two accusatives; माणवकः, मार्ग पृच्छति. &c.
  - 7. See page 34 of the text.

#### LESSON X. Page 39.

I salute God. Thou suspectest fear. The heart trembles from fear. The sun shines,

#### Page 39 continued.

A tiger dies. Thou speakest a falsehood. I praise Hari's exertion. Thou seekest thy books. A warrior destroys his enemy. Sweetmeat pleases the child. Where is the mat? A jeweller examines the jewels. He rejoices at the acquisition of a son. A wise man gets heaven. O Rama, thou behovest well through modesty. doin. Happiness results from wis-Rama's friendship increases

A king strives for the welfare of his people. A pupil serves his master. Rama learns the use of miraculous weapons Viswamitra. A man obtains tranquility by

good conduct.

I do not hope happiness from the bad conduct of my

I begin the worship of gods. The mountain does not shake even by strong wind.

I sport in meditation of God.

न्यायस्याध्ययनमारभे. क्रोशं सहसे. कृष्णो बालके रमते. वृक्षः कम्पते. नृपं सेवसे. धनं विनदे.

upon Narayana.

ऋषीन् वन्दते. योघोऽरिभिर्युध्यते. ? पारितोषिकमपेक्षसे. मित्राणां कल्याणे मोदे शठो नृपस्य शासनान्यवधीरयते. कपिं प्रेक्षे.

Page 40.

रामोऽसंख्येर्गुणैः शोमते. देवाद्वयेनासत्यं न भाषते. शुक्कपक्षे चन्द्रस्य विग्नं वर्धते. पापी मित्राण्यपि राङ्कते. वृक्षः फलानामुद्गमेन विराजते. पापादाध्यात्मिको नाशो जायते. भणान् मृगयते. आचार्यात्कृत्यं शिक्षे अायो नरो धनाय यतते. किवन्त्रेपं श्लाघते. अरीणां बाणैक्रिये. दण्डनाद्धयेन वेपे.

## LESSON XI; Page 41.

Brahmins taste sweetments. You get money from exertion. You swagger in vain. man for money. [merits.] Wisemen obtain heaven. You two praise your own You two suspect a fraud.

#### Page 42.

People rejoice at the pros- | Stars do not shine by day. perity of their friends. We two salute the sages. We do not endure the impudence of fools. There are flowers on trees. You obey the command of your teacher. [servants. We forgive the faults of our Rama's two eyes throb. Birds fly in the sky. People wonder at the skill of Krishna, [worship of God. We begin the music for the

The sinners do not care for the censure.

Wise men speak a sentence which is true and beneficial. Kings do not forgive the violation of their order.

We two learn music from the songster. Wise men strive for absolu-Trees shake by wind.

Men beg gods for worldly existance.

वसन्ते फलानि लभामहे. असत्यानि भाषध्वे. गिरयः कम्पन्ते.

तारकाणि प्रकाशन्ते. नत्यं शिक्षध्वे. ्यतेते. नारायणस्य मित्रे कल्याणाय

आम्राणि स्वादेथे. प्रासादस्य शिखरे मयूरं प्रेक्षामहे. व्याघास्त्रणानि वक्षाणां पणानि च न स्वादन्ते.

। ऋषीनभिवादयावहे. लोकात् सुखं दुःखन्न जायेते. कारणं विना युध्येथे. बालावुद्याने रमेते. हरे: कल्याणं अपेक्षावहे.

#### Page 43.

मित्राणामपराधान् क्षमेथे. बुधानां गुणान् श्लाघन्ते. दुःखानि पापाज्ञायन्ते. नरा ब्रियन्ते. याचकास्तण्डलं याचन्ते. शुका वातायने डयन्ते.

नरा यतानां फलं विन्दन्ते. मूर्वस्याङ्गानि वर्धन्ते, परं न ज्ञानं. अरीणामुपालम्भान् सहावह. वीरा विविधैः शस्त्रेररीन् निष्द-

#### LESSON XII; Page 44.

Golden coins are given to Brahmanas. King's command is obeyed. Wood is burnt by fire. [men Two rogues are beaten by Duty is taught by teachers. Thou art served by thy serfriends. vants. I am abandoned by my

We are seen by people. You are pained by diseases. Thou art seen by people. You two are adored by your sons. The heaps of corn are carried. Truth is known by wise men. His enemies are conquered by the king

#### Page 45.

Children cry. The two charioteers are killed. God exists. Sages are saluted by people. You are praised by people.

The sun shines.

Page 45 continued.

Sweetmeats are tasted by children.

We two are saluted by pupils. The verses are learned by pupils. Rice is cooked by cooks. God is saluted.

अरिकाणेन हन्यते. बालस्य हस्ती वारिणा क्षाल्येते. कविभिवण्यसे. जनेर्मृग्यध्व. मत्यैः सेव्ये. इश्वरेण रक्ष्यामहे. जनैर्बुध्येथे. गजा आरुह्यन्ते. पौरैः प्राथ्यावहे. यतिभिलेकिम्त्यज्यते. शरीरमन्नेन पुष्यते.

स्तेनैरश्चावपहियेते. वृक्षेष वारि सिच्यते. धान्यस्य राशयोः रच्यन्ते. कृष्णस्य शरीरमलङ्कारैभृष्यते. बधानां गुणाः कविभिः श्लाध्यन्ते. ध्वनिः श्रयते. स्तेना नृपतिभिद्ण्ड्यन्ते. हरिणा फल भक्ष्येते. बाणावस्थेते. न्वेणादिश्यध्वे.

Page 46.

नरैः सदा सुखमिष्यते. समुद्रस्य वारोणि न पीयन्ते.

सदाचारेण देवाः तुष्यन्ति. सेनापतिना सेनिका गण्यन्ते.

Roots of the 6th conj, ending in short \* substitute for the ऋ रि, which with the following अ of the conj. sign becomes रिय; as म becomes; म्रि + अ = म्रिय.

If a root ends in \* which is not preceded by a conjunct consonant, fr is substituted for it before the य of the passive; as, कियते. from कृ.

2. The final g or s of a root is lengthened before the s of the passive; as, जि — जीरते; श्रु -श्रूपते.

The final आ of स्था, दा and पा (to drink) is changed to ई before the य of the passive; as, स्थोयते, दोयते, पोयते.

Roots of the 10th conjugation whose vowels take a guna or vridhi substitute in the active voice undergo the same change before the च of the passive; as, घोड्यते, not गुज्यते, ताड्यते, not तड्यते.

- Sing.
   Du.
   Pl.

   3. First person;
   वधें
   वधावहे
   वधामहे etc.

   प्रिये
   प्रियावहे
   प्रियामहे etc.
- 4. रच् and other verbs having the same sense govern the dative of the person or thing pleased or satisfied; as, मोदको बालकाय रोचते.
  - 5. गम्यते. दृश्यते and स्थायते etc.
- 6.  $\exists$  or  $\exists$  is used either after each of the parts of speech joined together or once only after them all. See page (\*) 37 of the text.

# LESSON XIII; Page 49.

Arundhati is the wife of Vasishta.

Women see from the windows of mansions.

Krishna learns arts.

Rama marries Janaka's daughter.

The Ganges flow into the sea.

Forgiveness is an ornament to a warrior.

Narayana calls his mother.

#### Page 49 continued.

The king's two daughters are playing in the garden. He touches the two creeping plants. The night behaves by the moon. The two rivers flow together. The vergin speaks with her two female friends. Hogs bewail of their female companions. A rool abandons his shame. An actress (নহা) is the chief actor's wife. Subjects are protected by the king. He sees the beauty of the garden. Women ascend the upper surface of the palace. The king's two commands are obeyed. Brahmins ramble over the earth. Rama's stories are heard. Two young women are in the garden. The well is four miles from the town. farmy. The earth shakes with the burden of the king's Garlands of flowers are removed from the neck.

नारदो महीं स्वर्गादवतरति. कृष्णो नृपाणां कथाः कथयति. प्रमदा उद्याने रमन्ते. कण्डे माले धार्यति. रामस्य पतन्यरुन्धतीं वन्दते. कुमार्थी प्रेक्षामहे. हरिणानां सहचर्यी हरिणाननु-सरन्ति.

Page 50.

मामे वाप्यो वर्तते. सूत्रधारो नटीमाह्नयति. हरिनेदी गच्छति. रामस्य जनन्यावरण्यस्य गमनं नार्यो वापीर्गच्छन्ति. [शोचतः. प्रजा नृपस्य शासनान्यनुरुध्यन्ते.

## Page 5) continued.

हरेः कन्या नत्यं शिक्षन्ते. उद्यमेन कलाः संवर्धन्ते. बुधाः सदा क्षमामाचरन्ति. लोकस्य शोभा चित्तं हरति. बालानामभ्युदये जननी मोदते. नारी कोपेन सहचरीं त्यजित. कीडाया आरम्भे सूत्रधारो नटी- नृपः प्रजाः स्वप्रजामिव तन्त्रयते. माह्वयति.

नरा नारी रक्षन्ति. तारकाणि रजनीं जीभयन्ति. वैयात्येन लजा जीयते. ं लता वृक्षाणामाश्रयं मृगयन्ते.

#### LESSON XIV; Page 52.

He gives oblation for deities. Rama loses his sense by the pain of his mind. A message is sent to his wife. He comes from Avanthi. Fruits please Krishna's wife. The queen is served by her maid. The body is wasted by old age. The palace shines by the lights of jewels. He enters the house through shame. He obtains happiness from the worship of God. Kings wish benefit to their subjects. The messenger returns from Kousambi. He enters the garden for sport. Sita is surrounded by her female friends. The elepant is followed by his two female companions Rama departs from Panchavati.

Page 53.

The tree is plended with the two creepers,

The town is four miles from the Ganges. He bears water from wells. The boys come from their schools. Mind of men is burnt by anxiety. Just as quarrel is produced from speech, so too is love. Hari gives garlands of pearls to his daughters. The message of a king is being heard by his queen with a tranquil mind. sprouts. The young of an elephant is nourished by Sita with

हरिवाचया मित्रं सान्त्वयति. परी नदीभिः परित्रियते. नरश्चित्तस्य स्वास्थ्यं क्षमायाः बि-न्दते. बुधा मह्याः स्वर्ग्य गच्छन्ति. वसिष्ठोऽरुम्बत्याग्रिच्छति. रामः कन्याभ्योऽलङ्कारान् यच्छ मालाभिः शरीरं भूषयति. महिषी दास्य कंप्यति. जरठस्य कथाभ्यस्यखं लभते. ति. नारायणस्य पत्न्या तण्डलः पच्य-

नपस्याज्ञयावन्तीं गच्छामि. जननी विरूपानिप बालान् इच्छति. योधौ पुरीभ्यामस्रेस्सह प्रतिष्ठेते. सर्यस्य रक्तया प्रभयाकाशो भुष्यते. िति. कलाभिजनानां सुखं संवर्धते. नरा देवताम्यः सुखस्य छाममि-कुमारीम्यां बलिः क्रियते. व्यथा चिन्ताया उद्भवति.

Page 54.

सीता सर्खाभ्यो गीतं शिक्षते. | देवानां पूजाये कुसुमान्यानयति. सैनिकास्सेनापतेराज्ञया पुर्याः आ- राज्ञ्या दास्य पारितोषिकं दीयते बालाः क्रीडाभिजनकस्य हृदयमा-

ह्यादयन्ति. विहगो मह्या आकाशे उत्पताति

#### LESSON XV; Page 56.

There dwells a king Sudraka in Avanthi. There is much water in the Ganges.

[by kings.

An establishment of the duties to their subjects is made Women dance at Siva's worships at Ujjain.

O female friend, I go to the bank of the river.

Two elephants play in the water of the river Godavari.

Kings play with young women in the water of the rivers in summer.

Women enter the bower of creepers.

Lotuses grow in the well.

He sits on a stone under the shade of trees.

Krishna praises the modesty of his wife.

The moon is the lover of night. [made.

The preparations of the marriage of two daughters are

Rama obeys the command of his mother.

O beloved wife, our son goes to the village.

Sakuntala has much affection for her two female friends.

The beauty of the moonlight captivates the mind.

There is sweetness always in the speech of wise men.

The request of his wife is (done) obeyed by Rama.

The queen has full confidence in the sayings of her two maid servants.

The knowledge of the people increases by the establishing of schools.

#### Page 57.

The sweeping of streets is done by citizens.

Dasaratha (is) was the king of Ayodhya. [old age.

The desire of men does not becomes calm even in their

The desires of men are fulfilled by the worship of deities.

गङ्गायास्तीरयोर्न्नक्षा वर्तन्ते. जयन्त इन्द्राण्यास्तनयः. द्वर्यते रामस्य मित्राणि नगरे जीवन्ति। चकोरः कौमुद्यां तुष्यति. लतायाः कुसुममानयति. हरिः कन्यानां गुणान् शंसति. नदीषु मत्स्या वर्तन्ते. अयोध्याया रथ्यासु रथान् प्रेक्ष. शकुन्तला सखीनां खेदमहिति. रामस्य वाण्यां माधुर्यमस्ति. सीतायाः पुत्राः कुत्र सन्ति ? दण्डकायां निशाचराः वर्तन्ते. मह्यां द्वीपा वर्तन्ते.

वृक्षस्य छायायां नरान् पश्यामि.
प्रायो निशाचरा निशायां चरिनतः
जनन्या हृदयं कन्यां प्रित क्षिण्धं वर्तते.
गङ्गाया वारीणि पुण्यानि भवन्ति.
महिष्या आज्ञ्या शठो दण्ड्यते.
कलानां बाहुल्येन देशः संवर्धते.
शिलानां समूहेन नद्याः प्रवाहो निरुध्यते.
दासी प्राये सम्भारमानयति.
लताभ्यः कुसुमानाम् अवचयायोद्यानं गच्छामि.
नृपस्य शासनानाम् अनुष्ठाने दक्षो भवति.

#### Page 58.

2. আ and ₹ are the feminine terminations in Sanskrit.

The feminine of adjectives ending in अ is generally formed by adding आ, as, श्रेष्ट—श्रेष्टा.

#### LESSON XVI; Page 60.

Rama conquered Ravana. Sita went to the bank of the river Godavari.

#### Page 60 continued.

I drank water of the Ganges. A warrior threw arrows at his enemy. Two women sat under the shade. Thou toldest thy sons about the duty. We two abandoned Sita in the forest. Thou protectedest people from difficulties. Two goats fell from the summit of the mountain. I led the chariot to the battle-field. Hari ascended the horse. I gave gold coins to beggars. We two worshipped the gods. I saw buffaloes in the forest. Two thieves stole the wealth of a rich man. Dasaratha called his son. Hari's pain perished by the favour of God. I formerly dwelt at Ujjain with my wife. Two pupils bowed to their preceptor. Thou wert at Avanthi. Thou wert at Ayodhya. Fire burnt the forest. I knew the worthlessness of the world. A rogue spoke falsehood in the presence of the king. I knew then, that I was a fool.

कासारस्य जलमशुष्यत्. सेनापतिः सेनां समराङ्गणमनयत्। नित्रे राममस्मरताम् । रामस्याचारेणातुष्यः । अरण्येऽवसतम् ऋषीनसान्त्वयाव.

| ईश्वरो महीमसृजत्. 🕆

#### Page 61.

सार्थी नगरान्नगरमाटत् . ग्रन्थमप्रथयम् . हरेरुद्यानात्फलान्यहरतम् . रामाय कथामकथयतः . व्याष्ट्री गोष्ठमधावताम् . कृष्णः पादावक्षालयत् . योधोऽरेनिरिरस्सत् . कृषेः शनैरसरत् .

अम्युदयस्याशां विना तदानीवम्. भाजनाय तण्डुकमण्याव. नृपस्य सभायां महिष्यगायत्. धान्यस्य गुष्टिमिर्मृगानपुष्यत्. अपराधं विना पत्तीमत्यजः. कारणेन विना प्राममदहतम्. वृक्षस्य शिखरादपतद् अनश्यच. बालस्यन्तोषेणानृत्यत्.

#### LESSON XVII; Page 62.

There were battles between the Pandavas and the sons of Dritarashtra.

Preceptors taught duty.

[Godavari.

Rama sported with Sita on the bank of the river Thou gotest wealth by exertion,

#### Page 63.

The heart of a woman trembled on hearing the cry of a tiger.

I strove for the welfare of my friend.

Herdsmen led the goats to the village.

You beat a man.

A jackal died.

The learned entered the court of the king.

You touched a dead body.

Women danced in the palace.

We asked an individual the road.

Pain was endured by Rama.

#### Page 63 continued.

I spoke to the goddess.

A wicked Rakshasa was killed.

Thou despisedest the king's order.

The sages were pleased with Lava's modesty.

His father was served by Hari.

We dwelt on the summit of Chitrakoota.

I saw a jackal and a tiger.

They fainted by the loss of wealth.

Much wealth was given to Brahmins by the king.

The earth shook by the march of the army of Chandrapeeda.

We released up the bird from the cage.

मृक्षस्य छायायामुपाविशाम.
भृत्यानामपराधानक्षमत.
गङ्गाया जलेषु ब्राह्मणा अपतन्.
अश्वास्समराङ्गणमधावन्. [ध्यतः
रामो जनकस्य शासनान्यन्वरु

हरिनीरायणात्सङ्गीतमशिक्षत. आम्रस्य फलान्यस्वादे. दूता अयोध्यामगच्छन्. असत्यमभाषथाः.

## Page 64.

कृष्णो मित्रस्य कल्याणेऽमोदतः तदा कौशाम्ब्यामजीवतः रामस्य पराक्रमेर्व्यस्मयतः अरिणायुष्यथाः नृपतेराज्ञया शठोऽताङ्यतः निष्कानगणयतः ऋषेराशीर्वादो रामेणेष्यतः देवानां प्रसादेनारीनजयंत्.

मदिरायास्त्थाने जलमिषाम.
अतो गृहाय पुस्तकान्यहरत.
हाः सूर्य उजवलं प्राकाशत.
रात्रो स्तेनेन गृहं प्राविश्यत.
सेनापति सेनां चापश्याम.
नृपं समराङ्गणादवहन्.
अरिषु बाणानमुखन्.
मालाया प्रथनमारभे.

## LESSON XVIII; Page 66

Pandavas obtained their kingdom. The pupils saluted the teachers. The ministers spoke to the king. a woman. Two flowers dropped down from the braid of hair of You were laughed in contempt by people." We saw a crowd of people in the street. Rama's miseries perished. You two did not feel shame at leaving your friends. The parrots flew from trees. Two deer were killed by hunters. We strove for the welfare of the people. The demons rivalled with Gods. Women sported with their lovers in the moon-light. We were asked by people "when did you return from Ujjain?"

Trees shook by the wind.

The generals rejoiced at the defeat of their enemies. Thieves entered the house, but did not get money.

The daughters saluted their father.

We learned the use of weapons from our preceptor.

They shone by the power of knowledge and by heroism. Husbandmen began to sow the seed.

Nonayana's misled estions did not blos

Narayana's wicked actions did not please his father.

Hari's prosperities increased by industry.

We did not suspect an evil.

Heaps of corn were given to Brahmins.

#### Page 67.

कपयो राक्षसैः सहायुध्यन्त. क्षमयोपालम्भमसहन्त. काइयां पण्डितैस्सहाभाषावहिः प्राच्यां नक्षत्रे प्राकारोताम्

#### Page 67 continued.

नरैः प्राह्म जन्म.
रामेणादिश द्रुष्णेत् स्रम्पनत्रयामहिः व्योजाः कदा न्यवर्तन्त? हर्षा दं नापेक्षामहिः

पार्वशाकियां पुस्तकान्यलभामहि. प्राक्षिको कन्य स्टें पर्वेक्षेताम्. जनन्या दर्कतेनामोदावहि. ग्रन्थं (कार्व) नारमेथाम्. ऋषिमभ्यमादवाकहि. सृपादवधीरमामञ्जद्भेताम्.

गन्धवीणां कुलेऽजायामहिः नायकस्योपदेशं विहगा अवाधीर-यन्त, जालेऽपतंश्चः [न्तः ब्राह्मणानामपराधा नृपतिनाक्षम्य-व्याघस्य दर्शनाद्भयेनाकम्पेधाम् गजस्य प्रहणीयायतध्वम् [ताम् जननीं विना बालो सुखं नाविन्दे-रामस्य गुणाः कविभिरश्चाध्यन्तः उद्योगेन प्रभूतं धनमविन्दन्तः वने कन्याममृगयेताम्ः पान्थाभ्यामाम्ने आस्वाधिताम्

Page 68. अस = to be (imperfect).

 आसम् आस्व आस्म आसीः आस्तम् आस्त आसीत् आस्ताम् आसन्.

अर्= eat.

आदम् आह्र आग्न आदः आतम् आत आदत् आतम् आदन्

Imperfect 1st persons:-

ऐसे, असृगये, असृजम्, अरोचे, न्यमन्त्रये, ऐच्छम्, अशिक्षे, अजीवम्, अडये, अम्रिये, अजाये and अवर्ते.

2. A consonant at the end of a word of matical form followed by a nasal is changed to the nasal of its class optionally; as,

# तत + नास्ति = तन्नास्ति or तहास्ति.

This change is necesary when the nasal, belongs to a nominal termination; as,

#### वाक् + मय = वाड्यय.

g preceded by any of the first four letters of a class is changed to the fourth letter of that class is changed to the fourth of that class optionally; as,

4. See the last 3 lines P. 60 of the text.

#### LESSON XIX. Page 72.

Siva conquers. Two arms throb. Trees shake with the wind.

Bees drink honev. Men desire wealth. Indra conquered his enemies.

The warrior discharges two arrows at his enemy. Chataka a bird does not get even a drop of water. Worship pleases Vishnu. The servants were ordered by their lords.

I salute the creator of the universe.

I tell the teachers about the immodesty of the pupils.

Sita followed Lekshmana her husband's brother.

People say that the daughter's husband is the son-in-law.

A message is sent for her husband.

Tears drop down from the two cheeks of a woman.

#### Page 72 continued.

Indra's capital was created by the architect of gods. Their fathers were saluted by their sons. Rama is Janaka's son-in-law. Pandavas conquered their haters in the battle. The servant follows his master. The code of law was written by Manu. People are created by the creator. The water of the tank was drunk by travellers. The beggars did not get (find) the donor.

आकाशः पांसना भ्रियते.

परशुरामः परशुना शत्रुं प्राहरत्. शिशुः पितरमनुसरति.

रामः शिश्यभ्यो मोदकं यच्छति, । जलस्य बिन्दवो मेथेभ्यः पतन्ति. नृषा नगरस्य रक्षितृनाह्वयत्.

Page 73.

अवन्त्याः प्रभुस्सचिवानभाषतः हरिजिह्नया ताल्बस्पृशत्. नार्यो भर्तभिस्सहोद्यानमगच्छन्. ऋषयो मन्त्राणां द्रष्टारः. जना विष्णुं पूजयन्ति. ऋतुपर्णस्सारथीनभाषतः रामो लक्ष्मणेन भात्रारण्यमगच्छत्. रामेण बाणै रावणस्य शीषीण्य-नारभ्यते. च्छिद्धन्त. विद्यम्यो भयेन।नेकशो नरेः कार्य-भीमो बाहुम्यां श्त्रुणायुध्यतः देवाः पापस्य कर्तृन् दण्डयन्ति.

जनैर्विमार्गे गन्तारो निचन्ते. धर्मी देशस्य नाशाद्रक्षिता. दुर्जनस्य जिह्वाया अग्रे मधु ति-ष्ठति, हृदये त विषम्. तरवञ्जायया पान्थानाह्वादयन्ति. वनस्य गमनं विश्वामित्रेण सह रा-मस्य पित्रान्वमन्यत. वातः श्यामान् मेघान् निरस्यति. क्षुधितायात्रस्य दातृन् जनाः प्र-शंसन्ति द्वान्य सीताया भर्ता देवसून सीतामन्वे-च्छताम्.

# LESSON XX; Page 76, ;

Flowers fell from the tree.
There exists welfare by the favour of God Siya.
We obey the commands of our teachers.
The sages do not care for the fear of death.
Rama has great respect towards his father. [gressed.]
The wish of the creator of the universe, cannot be trans-

#### Page 77.

He does not endure the happiness of his haters.

A spot is seen in the moon.

Rama has affection towards his relations.

There is sweetness in honey.

Among men, Brahmin is the best.

They get wealth from donors.

A messenger came from Kurus.

The father's brother is called the paternal uncle.

Ascribing something unreal on a real thing is ignorance.

He conquered the earth by the strength of his two arms.

Karna discharged arrows upon Arjuna the brother of Bhima.

The falling of a sharp arrow upon the soft skin (body) of a deer is like that of fire uppon a heap of cotton.

Men are abandoned by relations when prosperity becomes little.

Gratitude is found even in beasts.

He began to tell a story by the importunity of his hearBe not angry at thy friend that gives wholesome advice
although it is disliked.

[grandson.]

The people of India have a longing for obtaining a
The good have very great mercy towards animals.

He leads his daughter to the house of his son-in-law.

रामी रचूणां प्रथमः कर्तुः पुस्तकमलमेः लक्ष्मीविष्णोभीयोः श्रोतृणां क्षमां याचतेः जनको नप्नृणां रथमपश्यत्ः हरेर्जामातृणामश्वान्तारायणः प्रैक्षतः आर्याः कुरुष्ववसन् . वृक्षे शुक उपाविशत् हरेर्नप्तृभृत्यो ब्राममगच्छत्. कर्णो दातृणां प्रथमः.

Page 78.

सिहो मुमाणां प्रभुः.
हरी रमाया भर्तुर्मित्रम्.
इन्दोर्बिम्बं वर्धते क्षीयते च.
श्रातू रामस्याज्ञया लक्ष्मणः सीतां वनेऽत्यजत्.
धार्तुरिश्वमजायत.
भर्तुर्वोर्तामलभत.
बाहोर्बलेनारीनजयत्. [नास्ति.
प्रबलादंपि वातात्पर्वतानां भयं

बुधाः शिशुभ्योऽपि ज्ञानमधिगशुर्भ्यास्तिकानि प्रकान सं यो उस्ति पापानि क्षमस्य श्रम्भी- नित्त ।
साधुषु परम ईश्वरेऽनुरागो दृश्यते।
तरूणां शाखासु विह्गा उपविशांति।
भृत्याः प्रभूणामादेशान् न लङ्क्षन्ते।
मातुर्गृहस्य गमनाय भर्तुरनुज्ञामविन्दतः
वैकुण्ठे वासो विष्णोभक्तिर्लभ्यते.

(2) Nouns of the masculine gender ending in उ are declined like those ending in इ, with this difference, that where इ, ई. ए or य् occurs in the latter, उ, ऊ, ओ or व should be substituted respectively in the former.

Nouns of the neuter gender ending in उ or ऋ are declined like बारि, उ or ऋ being substituted for इ, ऊ, or ऋ for ई and ओ or अर् for ए.

(3) The final % of masculine nouns is changed

to आर् in the first five inflexions and अर् in the case of पितृ, भ्रातृ, जामातृ, देवृ, तृ and सन्येषृ.

(4) so following a vowel is changed to so. This change takes place optionally when the vowel is long and at the end of a word or grammatical form, but after an negative particle and so preposition it is necessary.

## LESSON XXI; Page 83.

The fame of the good spreads in the world.

A bold man does not lose his courage even in difficulty.

Rama embraces his son with affection.

He worships god for absolution.

He came from the residence of the Yakshas.

Misery is produced from wicked action.

Madana is Rati's lover.

God is the protector of creation.

The greatness of intellect is for fame.

He sits on the ground.

[their son-in-law.

Rama's mothers went to the hermitage of Rishyasringa Sita took leave of her husband's brothers' wives and her husband's sister, and afterwards went to her father's house.

Raghu's father saved Vasishta's cow.

Narayana's actions are not for Hari's satisfaction.

Sudra is not authorised in Sruthi.

Wise men do not care for the praises or censures of fools.

The king is served by his ministry.

A herdsman protects his cows.

Young women bring water from the river.

The mother-in-law feels affection towards her son-in-law. He sees the moonlight.

## Page 83 continued.

He enjoys the result of his good action. The intellect is moved (affection) by avarice. Hari is naturally good. Rama gave balls of rice for his deceased parents. Duty is described in Surithi.

#### Page 84.

सीता ननान्द्रभेर्तारमृश्यशृक्षमन- हिरराध्यानेन रात्रीरनयत्. विश्वामित्रो जात्या क्षत्रियः पश्चा शौर्य कीर्ति प्रयच्छति. शम्बुको वृत्या कृषीवलः मीता सदा श्वश्रमशीणयत्. नृपस्यामात्यो नीतिषु निपुणः स्मृतिषु मनोः स्मृतिः श्रेष्ठाः महाराष्ट्रे सन्दर्राणामाचारः प्रशस्यः रामः स्वसारं शान्तामपश्यत् मात-रञ्चानमत्. रामो नरं जातिमपृच्छत्. नरा भतिमिच्छन्ति. अङ्ग्लां अङ्ग्लभूमेरत्रागच्छन्. वेरुलायाः सन्निधौ विवरेषु बह्वचो कन्यकाम्यः प्रभूतं धनं देवानां मूर्तयः सन्ति.

[द्वाह्मणोऽभवत्. कृष्णस्य बह्वचो द्वहितरोऽवर्तन्त. नरस्य प्रकृतिः कृतिभ्यो ज्ञायते. नारायणस्य नाशो तस्य दुष्कृती-नां परिणामः. धृतिः नृणां परमं भूषणम्ः ईश्वरे परमोऽनुरागे। भक्तिरिति कथ्यते. नरस्य बुद्धेर्विकास उपदेशस्य प-रिणामः. भीताया मुखं कान्त्येन्दुरिव वर्तते. गजस्य गमनं मन्दम्. [प्रायच्छत्. स्वयुरुपहारः प्रीतेश्चिह्नमभवत्.

Feminine nouns ending in 3 are declined like those ending in ई, उ, ऊ or व being substituted for the इ, ई, or य occurring in the latter.

(b) The termination of the instrumental singular of feminine nouns ending in  $\xi$  or  $\vartheta$  is  $\vartheta$ , and that of the accusative plural is  $\xi$ , before which latter the final vowel is lengthened.

In other respects these nouns are declined like the corresponding masculine. The forms for the dative, ablative, genetive, and locative singulars, are optionally, made up like those of nouns ending in § or  $\varpi$  respectively.

11. (2) Adjectives ending in उ or ऋ form their feminine by adding ई; as, गुनी, श्रोत्री &c.

#### LESSON XXII; Page 86.

Let (the) truth conquer. | Child! salute thy father.

Let messengers go to Ayodhya.

Let two sons ascend the horse.

O! Oh! do not abandon your modesty.

O! feinale friends, bring the flowers.

Friend, let us both enter the garden.

Abandon the water and drink the ghee.

How am I to live in the presence of tigers?

Let the world cross the difficulties and see benefits.

Let two peacocks dance on the top of the palace. O: children, do not speak falsehood.

Let diseases of men perish.

## Page 87.

Sit (you two) on your two seats.
O! child, call thy mother. [their duty.
Let kings always protect their subjects according to

#### Page 87 continued.

Let the people always enjoy pleasure. Advice me the revenge towards my enemy. Please (you two) your parents Let us not err from truth. Let the goldsmith weigh gold. Do the advice of your parents and teacher. Adore those who deserve to be adored. Let the travellers rest under the shade of the tree. Let two children wash their hands.

भ्रातरिभधानं कथयतः पिठतः। सोमस्य रसं पित्राम. बालाः! पाठशालां गच्छत पाठं च देवो राज्ञी रक्षत्र. बुधानामुपदेशाननुसराम. देवास्तुष्यन्तु. हरिमाधवश्च मा जल्पताम्. रामस्य विजये सन्देहं त्यजत. एवं नराणां शत्रवे। नश्यन्तुः दीनेभ्यो धनं यच्छ. चण्डाल, ब्राह्मणं मा स्पृश.

वंशस्य सुकृतीः स्मरतु. नराणां स्त्रतीरहोम. मित्राणामपराधान क्षाम्याम. बाल, पितरं दृढमाश्चिष्य. बालाः, मूकेभ्यो भूतेम्यो मा यच्छत. हरेश्चित्तं कोपेन मा क्षुम्यतु. पापे मा लुट्याम. गोपो धेनूर्गृहं नयत्.

Page 88.

जनानां काञ्चनाय तृष्णा क्षयतु. पुत्री जननीं प्रीणयताम्.

याचकास्तण्डुलमुञ्छन्तु. मूर्वा जल्पन्तु.

#### LESSON XXIII; Page 89.

Fight with your enemies. Let mind get tranquility. Pupils, salute your teachers.

Let the kings set about the benefit to their subjects. Let the two girls learn music

Serve (you two) your master. How am I to endure misery ! Let us strive for fame. King, may you conquer. Do not praise your brothers' merits. Let men rejoice at the abundance of corn-Step towards your conduct. Let the desire of the people increase on their duty. Let the two jackals die. Let the news be heard. Adopt your civility. Let the princes shine with exploit. Let mind of scholars sport (in) with learning. Let us begin music. the people. Let the miseries be endured by kings for the welfare of See the beauty of the forest. Let us not speak falsehood even in difficulty. Don't suspect an evil. Let trees shine with the appearance of fruits. Don't hope good from the bad conduct.

राज्ञ्याः शत्रवो वेपन्ताम्. आम्रं स्वादस्व. संस्कृतस्याध्ययनमारभध्वम्. ईश्वरस्याज्ञा अनुरुध्यामहै. इन्दुः प्रकाराताम् . अत्र पुस्तके आमीयेताम्.

Page 90.

देवदत्तमिरं मा मन्येथाम् . पुरुषाणां भूत्यां मादस्व. खल, म्रियस्व. नराः दुष्कृतिषु लज्जन्ताम् . औषधस्य गुणाः परीक्ष्यन्ताम्, धनानि पात्रभयो दीयन्ताम्, नराः सदा तस्य सुगयन्ताम्, पापान् (पापिनः) मा स्वाध्यम्,

## Page 90 continued.

तरोः शाखाभ्यो विहगा डयन्ताम्. | पितुः शासनानि मावधीरयै. साधूनां ऋजुतायां राठास्मयन्ताम् अरीन्निपृदयावहै. ब्राह्मणेभ्यो घान्यस्य राशयो दी भृत्यस्यापराधी भन्नी क्षम्येताम . नृषस्य सूनुजायताम्. कामान् लभस्व.

अमेणार्थमार्जयत्, मा याचध्वप्. बाली मोदकान स्वादेताम्. युद्धे मा हन्यावहै.

#### LESSON XXIV; Page 93.

He went to the river to drink water.

Pot is made by a potter.

A serpent was or is seen by Hari.

I wish to go to the village.

God is powerful to remove the pains of people.

Having abandoned his wife he went to the forest.

Rama's pain perished.

A remedy is contemplated.

A servant entered the house.

Rama, having heard the news told by Sambuka fainted.

Sita, having sported for a long time on the bank of the river, returned to her hut.

## Page 94.

Having entered the house he asked where his mother Thou art proud of wealth. was.

Many tanks and wells were dug by Rama.

Being thus told, Hari gave wealth to a Brahmana.

\* There was an inclination to mount the horse.

Having conquered his enemies he entered the town.

#### Page 94 continued.

Being asked her female friends, the woman felt shame. Pain was endured by Sita.

The sacrificial horse is let loose to go over the earth.

Having returned from the forest, Rama began to rule his kingdom.

He lifts up the cow that fell in the mud.

I am protected by god.

Many poems were learned by Hari.

We resort to the foot of the tree oppressed by the sun.

पवनेन मेघा निरस्ताः. चिप्तम् शिश्रश्चन्द्रं धर्तमिच्छति. कृषीवलैः क्षेत्राणि कृष्टानि, धान्यं नारायणेनोद्यमस्य फलं लब्धम्. शिष्यं सम्यक्पाठियत्वाचार्यः प- देवीं नत्वा क्षेत्रात्प्रत्यागतः रिणेतमनुज्ञामयच्छत्. पवनेनोदधिः क्षब्धः. सारमेयस्य पदान्यनुसत्य निर्दिष्टं भयस्य कारणं गतम्. स्थानमागच्छत्. रावणस्य भक्त्या शिवस्तुष्टः. ईश्वरेण नराणां चित्ते धर्माणां बी. जं निहितम्. अरीञ्जेतमुद्यता भवत. युद्धे बहवः सैनिका हताः. मृतं भतीरं स्मृत्वा पुनरप्यमूच्छित्. अभिषेकस्य समये कारागृहादिव-ला नरा मोचिताः.

हरेरपराधाः पित्रा क्षान्ताः. पर्वतमारुख कासारमपर्यन्त्र, खळान् साधनां मार्गे नेतं यतते. समद्रस्य तीरे बालस्यक्तः. होकस्य दःखान्यनुभूय यतिजातः. मार्गे बहवो ग्रामाः सैनिकेर्दग्धाः. मित्रं प्रतिभाष्य मौनमास्थितः or (मुकस्स्थितः). हरेः पत्न्याः प्रत्रो जातः.

प्रातरुत्थाय नरा मुखानि क्षालय-

राजपुरुषेस्स्तेना बद्धाः,

#### ANSWERS.

- 2. (a) The past passive participle is formed by adding ন to the root; as ক to do, হন done.
- (b) To form the present participle, the conjugational sign is first affixed to the root and then the termination अन् is added on to it when the root takes Parasmaipada terminations; as, जि, जयत, conquering; and मान is added to the root, when the root takes Atmanepada terminations; as, रम् to sport, रम-माण sporting, हम् to shine, जीभमान shining, etc.
- (c) The present participle passive is formed by adding य to the original roots of the 1st, 4th and 6th conjugations and to the change or substitute of the roots of the 10th conj. and मान is affixed; as, इरयमान, नोयमाण etc.
- (d) The infinitive of purpose is formed by adding নুদ to the root; as, ছ to do, মনুদ for doing.
- (e) Indeclinable past participle or absolutive is formed by adding त्वा to the root; as, रश to see, रख्या having seen. When a preposition is prefixed to the root, य takes place of त्वा; as, (भूत्वा) अनुभूय having experienced. त is prefixed to this य when the root ends in a short vowel; as, विजिक्ष having conquered.

| Roots. | Roots. past pass. present part. act. P. | present act. P. | present pass.P. | Infin. of Inde. pur. past.P. | fnde.   past.P. | with a prepo,                 |
|--------|---|-----------------|-----------------|------------------------------|-----------------|-------------------------------|
| मंग्   | मत                                      | मन्यमान         | अनुमन्यमान      | मन्तुं.                      | मत्वा           | अवमत्य <sub>ा</sub><br>अवमन्य |
| र र    |   | यजत्            | इंज्यमान        | ्य<br>इष्ट                   | Zie<br>St       | समिज्य                        |
| E,     | म                                       | मुखत्           | मुच्यमान        | मोत्तं                       | <u>C</u> 0      | बिमुच्य                       |
| बि     |   | खनत्            | खन्यमान or      | स्वातुं                      | खात्वा          | निसाय ा                       |
| •      |   |                 | खायमान          |                              |                 | मुखन्य क्                     |
| hợ.    |   | दहत्            | दह्यमान         | <b>ले</b>                    | दंग्ध्वा        | सन्दंश                        |
| E CH   | H.                                      | संजन्           | सुज्यमान        | ह्यू.                        | सहा             | विस्थ                         |
| PC'    |   | बहत             | अक्षमान         | <del>ब</del> ुद्धः           | न्त्र<br>स      | समुद्                         |
| Æ      |   | छभमान           | <b>लम्यमान</b>  | <u>चिक्स</u>                 | भेक <b>्ष</b>   | उपलम्य                        |
| E.     |   | आरमसाण          | आरम्बनाण        | आरब्धे                       | 1000            | आरम्ब                         |
| Page 1 | ब्रक्ष्म ।                              | स्रिच्यत्       | स्रिप्यमाण      | <b>1</b>                     | क्षिष्ट         | आरिक्रयः ।                    |
|        | •                                       |                 |                 |                              |                 |                               |

4. स of स्था is dropped after the preposition उद; as, उद + स्थान = उत्थानम्.

#### LESSON XXV; Page 100.

There is fear from the wicked even to the meritorious.

The light of the moon is delighting in autumn.

#### Page 101.

There is a cloud in the sky with lightning.

Child, live long.

The sensible become famous in the world.

Rama is like the incornation of virtue.

Do not neglect the conquering enemies.

The servant, ordered by your honour, went to the town.

Bow to devine Vasudeva.

Notwithstanding the presence of the teacher, an immodesty was shown by his pupil.

Nala saw the forest burnt by fire.

Days having elapsed, Narayana became learned.

When the king Dasaratha was ruling the earth, people became happy.

The lord of gods wishes to see Arjuna.

There is sweetness in the words of poets.

The saying of his two friends cannot be transgressed.

It is our prosperous king's order that you should come with your sons. [gold.

Pots are the transformation of clay and ornaments of The wicked are not requested by the good even in the destruction of their life.

In this world the birth of a son occasions festivity.

The predilections of the heart of the good are an authority in doubt.

The good are noble in adversity.

A teacher sitting on a stone taught virtue to his pupils, Page 102.

foloing virtue. Debtors are fully dependent. In this transitory life, there is no improper time for

नारायणः परवान् न भवति. वने हरिणाः शिलासूपविशन्तिः इन्द्रो मरुतां भर्ताः भिवति. कार्तिकस्य प्रथमदिने उत्सवो पाठशालां गच्छन्तं बालमपश्यम्. सम्पदि बहवा नरा नरमनुसरन्ति. आपदि नरो मित्रैस्त्यज्यते. कृष्णोऽश्वांश्चोदयते। नरानपश्यतः यतयो जगदरण्यं मन्यन्ते. धीमता नारायणिन ग्रन्थो लिखितः. नृशंसेर्गुणवन्तीऽपि निन्चन्ते. नराः सदायुष्मन्तो भवितुमिच्छन्ति यद्याप्नैः स्पृष्टो होतारमपि दहति.

तत् भगवता प्रमुना तथा विहितं. मृद्या वाचा कोपः शाम्यति. नारदो वियतोऽवातरतः सम्पदा साधव उद्धता न भवन्ति. स्वर्ग गच्छता गुरुणा (तर्त) तथो-वो राक्षसा हताः. पदिष्टसः वने वसता रामेण लक्ष्मणेन च बह-भवतां दर्शनेनातीव तृष्टोऽस्मि. नृषस्य सभासु बुद्धिमन्तः पूज्यन्ते. मरुत् वृग्तात् श्वश्चं कुसुमं हरति. कविभिविद्युन्मेघस्य पत्नीति मन्यते.

#### Page 103.

सुलमनुभवतां कामः सुलस्यानुभवेन बहुताः (पुनः) सुलाय संवर्धते. रामः श्रीमत्यामयोध्यायां पुर्यामजीवत्.

1. Wide page 99; line 11.

Present participles differ from this only in the nominative singular, the st of the last syllable being short; as, जयन .

The st of the nouns ending in इत and मह is lengthened in the nominative singular; as. अगचन्, कीर्तिमान्. Some ordinary nouns ending in consonant such as इदद्, भूशत् etc. do not change and are declined like whether masculine or feminine.

- 3. The neuter dual of the nominative accusative and vocative, or the feminine of the present participles, is formed by adding ई; however before ई, द is prefixed to the final द of the present participles of the roots of the 1st, 4th and 10th conj. and optionally to the द of the 6th conj. roots; as, पबन्ती, इपती or इवस्ती; fem. Nom. sing. or dual of the Nom. Accu. of the New. Adjectives ending in बद or इन्द्र form their feminine by adding ई; as, गुणवती, आयुष्पती.
- 4. च or ज is changed to क before any hard consonant, and to q before any soft consonant except a nasel or a semi-vowel.

This change takes place also when these consonants end in a word; as, बाझु, बाग्न्यां and बाक्. हुतमुझ, हुतभुग्न्यां and हुतभुक् respectively.

- 5. स following a vowel except अ and आ or a letter of the guttural class or र generally becomes प्: as, रामेषु, वाशु and चतुर्ष.
- 7. Locative absolute is similar in meaning to that of the English nominative absolute, (a noun or

a pronoun joined to a participle without being connected with any other verbs in the sentence, is said to be nominative absolute), as, अर्जुने इन्द्रलोकं याते द्रोपद्ध खिन्नाभवत्.

The genetive absolute has the sense of notwithstanding; as, पाण्डवानां परयतां द्रोपदीं कृषति स्म दुरशासन:.

#### LESSON XXIVI Page 108.

Sages are fruit-eaters.
Do not forgive thy offender.
The master gets angry with his servant. [name. Dasaratha's son is Rama by Men are born of the creator.
King! be happy.

Kanchuki is a man authorised in the harem of kings.

People are not able to know future evils.

The motion of the horse is impeded by stones.

#### Page 109.

The effect of the greatness of the creator of the world is seen everywhere. [place.

I saw a pilgrim going through the way leading to a holy Rama, by striving for the good of the people, put himself to trouble.

He praises his sons for their actions.

Krishna dwelling in the house of Vasudeva saw Narada descending from the sky. [moon resting on her lap. The queen of Sreeshena saw in her dream, the sun and the Let kings punish the guilty persons.

The heart of the wicked, as if made of stone, never melts on hearing the misery of another.

The beginning of good actions is for welfare.

A sage considers himself as a family-man by the world [mals. The life of the good in this world is only for doing good to ani-

The kindliness of the speech of men speaking sweetly is considered as meanness by rogues.

Kaikeyi was made to live like a tigress in the house by the king Dasaratha, for his own destruction.

Your heart is pleased.

#### Page 110.

In the first half of the day the shadow of trees is long in the beginning and decreases gradually, but in the other half it is short at first and becomes long after-wards.

Purity or impurity of gold is proved on fire.

देवदत्तो मेधावी भवति. पिता सूर्नुं प्रेम्णाश्चिप्यत्. नलो विश्वकर्मणः पुत्रः. पक्षिणो वियति डयरते. अनुजीविनः प्रभुमन् सरन्ति. पर्वतेष वक्षा रोहन्ति. कुमाराणां नामानि न स्मरामि. उपानहीं चर्मणा क्रियेते. हरेर्नाद्याः कर्मणां पारेणामः.

अपराधिनो मनस्सर्वदा साशङ्कम (पश्चिमरिप प्रेमाविष्क्रियते शिशु-राज्याः सन्देशः कञ्चकिना राज्ञे हतः.

मधुरं भाषमाणोऽपि सत्यं वदामि.

ब्रह्मणाऽखिला सृष्टिजीता. नरा भाविनोऽनथीन् ज्ञातुं बहुशः सोत्कण्ठाः. योगिभिर्मनिस शिवो मृग्यते. शत्रुणां शिरस्सु राज्ञा पदं निहितं. विनीतो नरः सदाचारस्य सीम्नो न लङ्कते.

दूरदेशे कुशलिनामात्मनः पुत्राणां वार्तायाः श्रवणेनामोदतः म्यः.

वने फलाशिभिर्वृत्तिः सुखेन कियते. भर्मणि (=गृहे) देवानिवातिथीन् अपूजयत् .

Page 111.

बुद्धेमहिमा नरः कीर्तिमान् भवति।

शोभने राज्ञि प्रजानां विश्वासो वर्धते. नराणां रुघिमा स्वीयैः कर्मभिराविष्क्रियते. ब्रह्मा प्राणिनोऽइमनोऽम्बरञ्चामृजत्.

#### ANSWERS.

- 1. न of nouns ending in अन is dropped in the nominative singular, and before all terminations beginning with consonants. अ of अन is dropped before the vowel terminations, beginning with the अस of the accusative plural, but not in cases when the अ is preceded by a conjunct consonant of which म or न is the final member; as, अवसन:, यज्यन: (अ is not dropped).
- 2. The wais lengthened in the first five inflexions, and so in the nominative singular only. This rule does not hold good in the case of neuter nouns, but in the plural of the nominative, accusative; vocative of these, the wand sare lengthened.
- 4. The feminine of adjectives ending in इन् is formed by adding ई; as, अपराधिनी.
- 5. When इ, ण and न at the end of a word or grammatical form are preceded by a short vowel and followed by any vowel, they are doubled; as, प्रसाह + आतमा = प्रसाहकातमा. सुगण् + ईशः = सगण्णीशः and सन् + अच्युतः = समस्युतः.
  - 6. If a nominal or verbal form ending in v, v,

भो or औ is followed by a vowel, the य and व of the substitute for the former are optionally dropped; as, रमन्ते + इह = रमन्त इह or रमन्तियह etc.

#### LESSON XXVII; Page 116.

Ascetics are forest-dwellers.

People say that the gods are dwellers of heaven.

Call thy younger brother.

Kusa is Lava's elder brother.

[him.

Krishna remembers the people, who are very dear to

See the rising moon.

The sky is covered with darkness.

Two clothes are worn by a girl.

He strives for welfare.

He beats his enemies on their heads.

He goes to Hari by his mind.

Let him enjoy the result of his penances.

Durvasas went to the residence of the Pandavas.

There are many heaps of corn here.

Having killed the Rakshasas, Rama obtained fame.

It is heard that the waters of the Ganges are white.

Dasaratha, advised by the learned, performed the sacrifice.

Keechaka, struck on the breast by Bheema, lost his sense.

#### Page 117.

He throws many offerings into the fire.

I saw the king's army encamped near the town.

A traveller, oppressed by the heat of the sun, resorts to the shade. [exceeded their desires.

The prosperity of the people that dwelt in Dwaraka Dasaratha, having heard the speeches of Vasishta permitted Rama's departure with Viswamitra.

Merits are the object of worship in the meritorious but neither sex nor age.

The great king Dasaratha, having heard the dreadful speech of Kaikevi fell suddenly on the ground and became motionless.

हरिर्वचसा मातरमसान्त्वयत् . निरुत् कुसुमेभ्यो रज आनयति. नारायणस्य कनीयान् भ्राता का- राज्यो यशः पृथिव्यां प्रसरतु. रयां वर्तते. पाणिनिर्वेदांश्छन्दांसी वदति.

प्रियंवदा दुर्वाससमगच्छत् **क्षमां** चायाचत.

अश्वांश्चोदयन्तं सार्थि हरिश्चक्षुम्यामपदयत्. रामः कनीयोभिभ्रीतभिरसेव्यत. वनोकसामृषीणामाश्रमास्तरूणां पर्णैः शाखाभिश्च निरमीयन्त.

Page 118.

भगीरथस्तपोभिर्वेधसम्प्रीणयत. सरसां पयस्य कमलानि सन्ति. राजा विद्याः पुजयति. जीणानि वासांसि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विद्वाय जीणीन्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ रघुमेंदिनीं धनुमिरिष्मिश्चाजयत. अय्रो क्षिप्तानि हवींप्यायना देवेभ्यो नीयन्ते. अयोध्यामध्यपिवांसो जनाः सुखभाजोऽभवन्. तमसः पश्चात तेजः, तेजसः परं तमश्चागच्छति. पक्षिणः कण्टकेषु (स्थितं) जालं त्यक्त्वाकाशेऽडयन्त. दीनानां धनस्य हरणे महत् पापं भवति.

वीरा यशसः कृते मृत्युमि न गणयिन्तः कनीयान् आता ज्यायांसमन्वसरत्. देवेभ्यो बहून् वरानलभतः जीवितादि सतां सत्यं प्रेयो भवतिः निश्चेष्टभेनोभिभेक्तरिश्चरो मृग्यते. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते.

#### ANSWERS.

1. Nouns ending in वस् and ईयस् or एयस् prefix in the masculine a न to the final स and their penaltimate अ is lengthened in the first five inflexions. The nominative singular ends in वान् and यान्; as, सेदिवान्, कनीयान्.

The nominative singular of nouns ending in अस् is formed by dropping the termination स and lengthening the अ; as, दिनोका:. But this स of nouns ending in अस and ईयस or एयस is changed to उ or visarga before the consonatal termination while the स of बस् is changed to द; as, चन्द्रमोभ्यां etc. and विद्वज्ञां etc. विद्वद is the nom. voc. acc. sing. of the neuter.

2. The व of वस is changed to उ before the vowel terminations beginning with that of the acc. plural and before the ई of the nom. acc. voc. dual of the neuter. This change takes place before ई of feminine termination. Before this उ the preceding ई, if any, is dropped; as, विदुष:, विदुषी, neuter dual or the sing. Nom. of feminine.

3. The feminine of nouns ending in वस् and ईयस् or एयस is formed by adding ई; as, विदुषी, कनीयसी, श्रेयसी. See the 2nd rule in the case of वस्.

#### LESSON XXVIII; Page 122.

Even though overpowered by misery, I should not abandon my duty.

I wish your honour may drink Soma juice.

O! shall I learn to dance or sing?

Thou shouldst know the reality with much effort.

Sons should please their parents by their good conduct.

We two shall obtain peace by the worship of God.

You should not regard a rope as a serpent.

When a man is in his misfortune, even a mean person can do him injury. [ing enemy.

No man shall neglect his growing disease and conquer-

Illiterate persons should be silent in an assembly of the learned.

Thou sliouldst leave the fatigue of journey in a mansion fragrant with flowers.

Kings should strive to please their subjects. [king. People should not act the traitor towards their good If Hari returns from his wrong path, good may happen. The virtuous and wise people can see Hari.

Children, you two obey your mother's command.

#### Page 123.

Thou shouldst fight with thy enemies.

Poverty can result from the idleness of Narayana.

A teacher should not endure an immodesty of the pupil.

A wiseman should neither loose his sense nor abandon his duty in adversity.

Sita said to Rama, " I wish that we should bathe again in the holy Ganges".

When a friend reaches the resting place even a mean person should not turn away (his face) from him, remembering his previous good actions.

One must give water to the thirsty and remove the calamity of the poor.

Thou shouldst sit on the mountain named Neechaise for the purpose of rest.

How could darkness be an obstruction to sight of people when the sun shines?

क्षारुयेतम्. नरा मित्राणि न विस्मरेयः. वृक्षस्य फलं यदि स्वादेशाः (तदा) दिरिद्रेभ्यो धनं यच्छेः. म्रियेथा:.

गृहं प्रतिनिवृत्तौ पाणी पादौ च अत्र वृक्षस्य छायायामुपविशाम. नृपाः प्रजा अपायाद्रक्षेयः. पतेन मनसेश्वरं पुजयाम. स्वकृत्येभ्यो न माद्येत. हस्तयोः प्रस्तके नीयेयाताम् . नराः कारणं विना न क्षुभ्येयुः. आचार्याच्यायं शिक्षेयाथाम् नरः परकीयं धनं न लुभ्येत्.

Page 124.

" शठा ताड्येयाताम् " इति नृष्णादिशत्. देशस्य रक्षणे यदि म्रियेमहि यस्रो है सेमहि. साक्षिणः सदा न्यायसभास सत्यं कथयेयः. यदि काशीं गच्छेयं बहूनि संस्कृतपुस्तकान्यानयेयम्. यद्यसत्यं भाषेध्वं भर्तिभिस्ताङ्येध्वम्.

शत्रुणा सः युध्येतेति नृषो नगरात् सैनिकाननयत्।
पापं कुर्वन् अहं यदि दृश्येय भर्तृभिस्ताङ्येयः [किं लभेरन्।
दिदा ब्राह्मणाः यदि पुरीं अभितः याचरन् काश्चिदपि दक्षिणां
"पितरौ तुष्येताम्" इति स्वस्रम्यः प्रभूतं धनं प्रायच्छम्।
जायापती दिने दिने गृहेऽप्तिं पूजयेतान्।
धर्मस्यानुष्ठाने नर आयासं न गणयेत्।
शिष्या आचार्यान् वन्देरन्।
विद्याः प्रतिहता अपि प्रारुष्धं न परित्यजेत्।

- 1. Vide page 119, (\*)
- 2. Vide page 12); line 12.
- 3. भोस drops its final when followed by a vowel or a soft consonant; as, भो बालका:! भो उपविश्वत.
- 4. The 1st person singular of the potentials:— नियंय, ईक्षेय, निमन्त्रयेय. स्जेयम्, हरेयम्, डयेय, मृगयेय, तिष्टेयम्, जायेय, पिवेयम्, act., पीयेय pass., कियेय pass., अनुभवेयम् act, अनुभूयेय pass., श्रूयेय pass., मुद्देयम् act., मुद्देयय pass.

#### LESSON XXIX; Page 129.

Whose books are these?
Whose sons are these?
Whose sons are these?
I call the man that I saw yesterday,
That female child spoke nothing.
I gave money to those Brahmans.
From which town did the messenger come?

Let whatsoever is pleasing to these be done. [nas. These enact only those stories which are heard in Pura-This is that place where I dwelt with my wife for a long time. [created.]

Bow to that God by whom this whole universe was The king spoke to those learned men well versed in the various Sastras.

Whose clothes are those two? [self purified. Salute that Arundhati by whom Vasishta thinks him-The prince has obtained proficiency in all arts.

Bow to that Goddess by whom Mahishasura was killed.

Those two rivers unite at Prayaga. [committed.

The king punished those two men by whom theft was The metaphysical sages dwelt formerly in this forest.

Bhageeratha with the water of the Ganges, saved those Sagara's sons by whom the earth was dug and who were burnt by the anger of Kapila.

The king Dasaratha went to Ayodhya with those Janaka's daughters whose marriages were celebrated with his own sons.

No one is seen here, but a cry is heard.

Those things which were formerly obtainable with much effort are now-a-days easily obtainable by the power of machines. [tained?

What is to be done by that cow whose milk is not ob-He, who has wealth, who is born of a good family, learned, versed in Vedas, meritorious, eloquent, and handsome, is a real man.

All merits depend upon gold.

क एते or क इमे ? (or का एताः, का इमाः). का वृत्तिस्तेषाम् or तासाम् ? सा हरेर्दुहिता.
किमिभधानं तस्याः?
कं रामस्तथावदत्? (or कस्मै etc.)
स गोविन्दस्य आता.
तेन सह पाठशालामगच्छम्.
तैबलिकैः सह कीडन्तं नारायणं सोऽपश्यत्.
मित्राणां किं (कतमिमत्रं) स्मरित सः?
तस्यां नद्यां मत्स्याः सन्ति.
स तयानुगम्यते.
तेम्यो ग्रामेम्य आगता नराः कुत्र वर्तन्ते?
यस्य शुद्रको राजा तस्मान्नगरात् त आगच्छन्ति.
राज्ञी,या दास्यः सन्निधावासंस्तास्तस्यै कुसुमान्यानेतुमादिशत्.

Page 131.

एतिस्मन् गृहे महाराष्ट्राणां नृपोऽवसत्.
तासां का (कतमा) कन्या गायति ?
केनेदं पुस्तकं निहितमत्र ?
अस्याक्षरस्य महात्मनः प्रभावेण द्यावाष्ट्रिययौ विधृते तिष्ठतः.
ताम्यां महती कृतिनीनुष्ठिता.
तस्यामटव्यां चिरमजीवम्.
कया दिशा जाल्मोऽगच्छत् ?
तिस्मन्देवायतने लक्ष्म्याः (काचन) दर्शनीया मृर्तिवितते.
हिरस्तस्मै (कामिप) अश्रद्धेयां कथामकथत्.

# लक्ष्मीर्यं मृगयते, स तस्याः (तया) प्राप्तं किमसाध्यो भवेत?

1. The following five terminations of pronouns differ from other nouns. In other respects the pronouns are declined like the corresponding nouns.

## Masculine ending in अ.

| Pronouns. |       | Termi.         |     | Termi.       |      |     | noun.    |
|-----------|-------|----------------|-----|--------------|------|-----|----------|
| Nom.      | pl.   | <del>§</del> ; | as, | सर्वे ;      | अस्  | as, | नृपाः.   |
| Dat.      | sing. | स्मै ;         | ,,  | •            | य    | ;;  | नृपाय.   |
| Abl.      | ,,    | स्मात् :       | "   | सर्वस्मात् ; | आत्  | ,,  | नृपात्   |
| Gen.      | pl.   | इपाम् ;        | ,,  | सर्वेषाम् ;  | नाम् | ,,  | नृपाणाम् |
| Loc.      | sing. | स्मिन्;        | ,,  | सर्वस्मिन् ; | ्इ   | "   | नृपे.    |

#### Feminine ending in आ.

|      | ${f Termi.}$ |          |     |              | $\operatorname{Term}$ |     |          |
|------|--------------|----------|-----|--------------|-----------------------|-----|----------|
| Dat. | sing.        | स्यै ;   | as, | सर्वस्य ;    | ए                     | as, | रमायै.   |
| Abl. | ນ            | स्याम्;  | ;;  | सर्वस्याः;   | यास् ;                | ,,  | रमायाः.  |
| Gen. | . 12         | स्यास्;  | "   | सर्वस्याः;   | यास् ;                | ,,  | रमायाः.  |
| Gen. | pl.          | साम् ;   | ,,  | सर्वासाम् ;  | नाम् ;                | ,,  | रमाणाम्. |
| Loc. | sing.        | स्याम् ; | ,,  | सर्वस्याम् ; | याम् ;                | ,,  | रमायाम्. |

2. The crude forms of pronouns (Relative, Interrogative and Demonstrative) end in consonants; as, यद, किम् (अदस् or इदम्).

Their declensions in the masculine and in the feminine resemble those of pronouns ending in a and an respectively.

3. स: and एष: drop the final visarga when followed by a consonant in a sentence; as, स पुरुष:, एष राम etc.

#### LESSON XXX; Page 133.

I am not guilty. [for us two. Raghunatha feels affection Where is my child? Goddes, I salute thee. Do not despise us. Let Vishnu protect you.

I wish to go to the garden with thee.

Venerable woman, I tell thee the reality.

Thou never givest wealth to me.

May God Siva be for your welfare.

Two children, where is your father?

When you are protecting the earth, whence is fear to us?

I open the news obtained from you to all. [fruitless.

A remedy contemplated by us to remove his misery, was

#### Page 134.

Thy virtue is as little as mine, because neither of us experienced pleasure for a long time.

My mind is impatient for study.

This is our horse.

Where has thy mother gone?

Our (two) minds are troubled on hearing this intelligence.

Angry Dasaratha asked Kaikeyi "O sinful woman, what fault has been committed to thee by me or by Rama".

By what reason art thou prepared for his evil?

So much affection of your honour is shown even upon us who are poor.

All our desires were scattered (removed) by fata just as an assemblage of clouds is by the wind (storm).

O! proud woman, what small fault dost thou see in me by which thou abandonest me who is thy slave.

Girl, thou art the daughter-in-law of those kings in whose family the sun and we are the heads.

You were we, and we were you; such was formerly the state of our (two) minds. But what has now happened? Why, you are yourselves and we are ourselves.

त्वं बुघोऽसि.

अहमिबश्चास्य इति किं राङ्कसे ?

यूयं यदा गिरिमारोहत (तदा) को युष्माकं मार्गोपदेष्टाभवत्.

कस्तुम्यमेतां कथामकथयत् ?

मम पिता काशीमगच्छत् , यदा च स प्रतिनिवृत्तः, बहूनि

पुस्तकान्यानयत् (तदा) तानि मह्ममयच्छच्च.

Page 135.

कथयास्मान् यत्तत्रापिततम् .

मम पुस्तकं कुत्रासीदिति युष्मानहमपृच्छम् .

अस्मिद्वियोगे मा त्रोचः

तव प्रसादेन सर्वाणि भयान्यपारयामः

तिस्मिन् काले युष्माभियेत्कृतं तदहं सम्बन्धिः
सोमवारे आगन्तुं साक्षिणो मयादिश्यन्तः [नहमयच्छम् .

यदा यूयं मम गृहमागच्छत (तदा) युष्मम्यं धान्यस्य राशीत्विय पराजिते सति तव सैनिका जेतारं श्ररणमगच्छन् .

बहुनामृषीणामाश्रमानावामपृश्यावः

हमानि कुखुमान्याबाभ्यामानीतानि सन्ति.

स तां वाती मदलभत.

सवीन्नरान् युवां निन्दथः.

अहमिदं पारितोषिकं तुभ्यं प्रयच्छामि.

मया बुधानां मार्गस्त्वद्विज्ञातः.

विना (कमिप) अपराधं ऋत्विजो मामताइयन् (or ताइयन्ति कारुणिक भोः! बालकेभ्योऽस्मभ्यं मा कुप्य.

स मित्रेभ्योऽस्मह्रमाटत्.

तस्य सारमेयस्य ता इनेन किश्चिदनुचितं कमे त्वयाचरितम्.

त्विय रक्षितरि कथं तव प्रजा विपदमनुभवेयुः?

अस्मासु हरिः श्रेष्टः.

## LESSON XXXI; Page 139.

Let this seat be adorned by your honour.

These horses run as if jealous of the swiftness of the deer.

This work is to be expounded in this way.

Child, take rest from this adventure.

Those two trees are these which I saw yesterday.

Give money to this learned Brahmin.

The friendship of these two girls pleases me.

I request the bird or deer for getting intelligence of n beloved.

O timid woman, he from whom thou suspectest repulsic stands here eager for union with thee

#### Page 140.

Thou seest before, this pine-tree adopted as a son by G Siva.

Just as this mate is dearest to thee in the herd of elephants, so is Urvasi to me amongst the best of women.

O Bee, give me news of that my mistress, 'whether my beautiful wife was seen by thee or not."

O swan, give me my wife whose gait was taken away.

Thou wert in this very bower of creepers.

The abode of the king of vultures was on the loughty top of this same mountain.

These trees bearing flowers are seen beautiful.

O maid, bring her quickly who went along this street.

What offence was committed by these to whom thou art prepared to do evil.

In as much as this man has prostrated himself at their feet. good ought to be done to him by them.

The lord of poets named Kalidasa formerly dwelt in this city. O Goddess, I ask this boon, if thou art pleased.

#### Page 141.

The result of that which is done in this world is experienced in the next world.

Comfort with these words my afflicted wife.

O Sita, these two are thy sons.

ममेदं पुस्तकम्. इमे नरास्तेषां राज्ञो विजयेन मो- आसु नदीषु प्रभृतं जलं वर्तते. एताः कन्या नृत्यं शिक्षन्ते. एतेम्यो गिरिभ्योऽनेका दृषदः एषु प्रामेषु बहवो विद्वांसो वर्तन्ते पतिताः सन्ति. एभिश्चर्क्षुभिनीहं पश्यामि. एभिर्दण्ड्रैः कश्चन चोर्मताडयम्.

[दन्ते. अस्मिन् वृक्षे कश्चन कपिर्वर्तते.

इमा नारीः शिवालयेऽहमपश्यम्.

एतासां नदीनां प्रभवा हिमालये सन्ति.

क्षांश्चिरमोदकानेक्यो वासकेक्यः ताक्यः कृत्यकाक्ष्यश्च प्रयच्छ.

्तस्य गिरेः शिखरादागच्छन्तं कञ्चिद्यात्रमपर्यम्.

अहमेताभ्यां स्तेनाभ्याः मम काञ्चनमरक्षम्.

अहं समराङ्कणाद्धावन्तं तं भटमपश्यम्.

्पास्थस्तेन मार्गेणामच्छत् . क्षेत्रेऽपराधोऽनेन हरिणेन कृतः ? मृदेमे गर्ते पूर्य. कदयोद्भिक्षां नाहमपेक्षे. [योर्वर्तते. अनेन वाससा छन्नोऽहमदृश्यो ृत्पस्य प्रासादोऽस्या नद्याः क्रोश- भवामि. तत्स्वाद्वाम्नं मह्यं प्रयच्छ,

इमे कन्ये अपि प्रदेये भवतः

#### ANSWERS.

- 3. Vide page 136 (\*)
- 4. A dental consonant followed by z is changed to ल्, and न to a nasal ल; as, तत + छनाति = तहुनाति, विद्वान् + छिखंति = विद्वाहिखँति &c.

## LESSON XXXII; Page 142.

1. Learning and kingship are never equal. The king is honoured (only) in his own country, (but) the man of learning is honoured everywhere.

Prose order. बिद्धत्वं च नृपत्वं च कदाचन तुल्यं नैव (भव-ति). राजा स्वदेशे पूज्यते ; विद्वान् (+तु) सर्वत्र पूज्यते.

2. One meritorious son is better than a hundred foolish sons. The lonely moon dispels the darkness, but not a cluster of stars.

गुणी एकः पुत्रः वरं (भवति); मूर्खशतान्यपि न वरम् चन्द्रः एकः (एव) सन् तमः हन्ति; तारागणोऽपि च तमः न हन्ति.\*

3. The whole of a forest is made fragrant by the sweet scent of a single tree bearing flowers, even so as a family is adorned by a virtuous son.

सुपुत्रेण कुछं यथा वासितं (भवति), तथा पुष्पितेन (अत-एव) सुगन्धिना एकेनापि सुनृक्षेण सर्वे तद्वनं वासितं भवति.

4. He, who attends on festive as well as sorrowful occasions, who assists in famine or when at war with the enemy, at the Royal gate and at the burning ground, is a friend.

यः उत्सवे च व्यसने च दुर्भिक्षे च शत्रुविप्रहे च राजद्वारे च रमशाने च तिष्ठति, सः (एव) बान्धवः (भवति).

5. The rogue should not be the object of confidence, because of his kind words. There is honey at the tip of his tongue but deadly poison in his heart.

्र्रात्स्पृदुर्जनः प्रियवादी इतिस्मृत्, एनन् विश्वासकारणं न भवति ; यतः जिह्वामे मधु तिष्ठाते, हृदये तु हलाहलं तिष्ठति.

## Page 143.

1. A wicked man should be shunned though adorned with learning. Is not the serpent fearful though adorned with a jewel?

दुर्जनुः विद्यया अलंकृतः सन्निष परिहर्तव्यः भवति.(तथाहि) मणिना भूषितः असौ सर्पः भयङ्करः किन्न भवति ?

2. He does not perish who mingles with persons of good

<sup>\*</sup> 1st. हिन्म, हन्वः हन्महः. 2nd. हंसि, हथः, हथ. 3rd. हिन्त, हतः, प्रन्ति.

breed, who contracts friendship with the learned and who mixes with his relatives.

कुर्लानैः सह सम्पर्कं; पण्डितैः सह मित्रतां च; ज्ञातिभिः सह मेलं च कुर्वाणः (नरः) न विनश्यति.

3. He who forsakes what is certain and goes after what is uncertain loses both what is certain and what is uncertain.

यः ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिषेवते, तस्य ध्रुवाणि नश्य-न्ति, अध्रुवं च (च=तु) पूर्वमेव नष्टं (किल).

4. The storm is fearful to the trees, the cold season to lotuses, thunderbolt to mountains and wicked people to the quiet.

वातः पादपानां भयं भवति ; शिशिरः पद्मानां भयं भवति ; वज्रः पर्वतानां भयं भवति ; दुर्जनः साधूनां भयं भवति.

5. Protection should therefore be given to the by the king who is desirous of prosperity. Salvation is not so (surely) obtained by sacrifices as by protection.

तस्मात् (= तत्कारणात्) भूति इच्छता नृपेण understood स्वविषये रक्षा कर्तव्या (भवति); रक्षणात् स्वर्गः यथा प्राप्यते, तथा यज्ञैः स्वर्गः न अवाप्यते.

6. To ripe fruits there is no other fear than of falling down. Similarly to the born being there is no fear other than of death.

पकानां फलानां पतनात् अन्यत्र भयं यथा न अस्ति und. एवं (=तथा) जातस्य नरस्य मरणात् अन्यत्र भयं नास्ति.

7. I am not afraid of death. Fame alone will become polluted. To me who am pure, death is indeed as welcome as the birth of a son.

अहं मरणात् भातः नास्मि, तथा चेत् understood यशः केवलं दूषितं (स्यात् ) हि (=यतः) विशुद्धस्य मे मृत्युः पुत्रजन्म-समः (स्यात्) किल?

8. There is no sin in me who am born of a sinless family. If sin be imputed to me, what am I to do who am free from sin?

(Prose order plain.)

9. Consider wealth always dangerous. Surely there is not even a particle of happiness in it. To the rich there is fear even from their sons. This is the established conduct everywhere.

त्वं नित्यं अर्थं अनर्थं भावयः ततः सुंखलेशः नास्तिः इति सत्यः भावयः पनाजां भीतिः पुत्रादिष भवति । एषा रीतिः सर्वत्र विहिता (दृश्यते) इति शेषः.

### Page 144.

1. Who is thy wife? Who is thy son? This world is highly mysterious: To whom dost thou belong? Whence art thou come? Think about the truth of these, my brother!

हे श्रातः! तव का कान्ता भवति? ते कः पुत्रः भवति? अयं संसारः अतीव विचित्रः दृश्यते इति शेषः. त्वं वा कस्य भवसि? त्वं कुतः आयातः असि? तत् इदं तत्त्वं चिन्तय.

2. If you want to know the truth soon, do not attempt either peace or war and be even-minded alike to enemy, friend, son and relations.

त्वं रात्री मित्रे बन्धी च विग्रहसन्धी यतं मा \*कुरु तं सत्

<sup>\* 1</sup>st. करवाणि, करवाव, करवाम. 2nd. कुरु, कुरुताम्, कुरुत. Brd. करोतु, कुरुताम्, कुर्वन्द्व.

तत्त्वं (or तत्) अचिरात् वाञ्छिति, यदि ? त्वं सर्वत्र समिचित्तः भव.

3. The boat of your body is bought by you, with the price of your boundless virtue to reach the other side of the ocean of sorrow. Cross before it breaks.

त्वया दुःखोद्धेः पारं गन्तुं महता पुण्यपण्येन क्रीता इयं कायनौः यावत् न भिद्यते, तावत् (दुःखोद्धिं) तर.

4. My friend tell me whence there is fear to that ascetic whose family consists of bravery as father, forgiveness as mother, continued calmness as wife, truth as son, mercy as sister, restraint of mind as brother, floor as bed, cloth as directions and nectar of knowledge as food?

यस्य धेर्थ पिता (भवति), यस्य क्षमा जननी; यस्य चिरं शान्तिः गेहिनी, यस्य सत्यं सूनुः, यस्य दया भगिनी, यस्य मनःसं-यमः भ्राता, यस्य भूमितलं शय्या, यस्य दिशः अपि (=च) वसनं, यस्य ज्ञानामृतं भोजनं, इत्येते यस्य कुटुन्बिनः वर्तन्ते, तस्य योगिनः कस्मात् भयं अस्ति understood? हे सखे, वदः

5. Courage in adversity, forgiveness in prosperity, skilful talk in assembly, exploit in fight, desire for fame and application in the Vedas -these are the inherent qualities of the great.

विपदि धैर्य, अथ अभ्युद्ये क्षमा, सदिस वाक्पदुता, युधि विक्रमः, यशिस अभिरुचिश्च, श्रुतौ व्यसनं च, इतीदं महात्मनां प्रकृतिसिद्धं भवति.

6. Laziness is the great foe residing in the body of men. There is no friend equal to exertion, by doing which one does not decline.

आलस्यं हि (=तु) मनुष्याणां शरीरस्थः महारिपुः भवति;

## यं कृत्वा (जनः) न अवसीदति, (तादृशः) उद्यमसमः बन्धुः नास्ति.

There was an elephant named Karpurathilaka, in the forest of Brahmaranya. On beholding him all the jackals thought thus 'If he meets with death by any stratagem his body will serve as food for us for four months.'

### Page 145.

An old jackal then promised "By the power of my intellect his death should be brought about by me." And then the cunning jackal having approached Karpurathilaka. prostrated himself on his eight limbs and said "my lord grant me the favour of beholding me." The elephant & says "Who art thou? Whence art thou come"? He replied "I am a jackal. To your Honour's presence I was sent by the assembled beasts dwelling in the forest. It is not proper to be without a king. So your honour possessed of all (good) qualities has been selected to be crowned. Therefore your majesty should come quickly, so that the auspicious moment may not slip." Having said thus, he rose and went away. Then this Karpurathilka being drawn by avarice for the kingdom ran along the path of the jackal and fell into the deep slough. The elephant then said "my friend jackal, what is to be done now"? Having fallen into the mud I am about to die. Turn round and look at me." jackal jestingly replied "My Lord, hold my tail and get up Let helpless pain be therefore endured by you for placing confidence on my word."

<sup>§ 1</sup>st. ब्रुवे, ब्रूवहे, ब्रूमहे. 2nd. ब्रूवे, ब्रुविये, ब्रूवे. 3rd ब्रूते, ब्रुविते, ब्रुवेते.

## THE PARTICIPLES.

| Roots.             | Present.   | Inde.                    | Infi.           |
|--------------------|------------|--------------------------|-----------------|
|                    | act. $p$ . | past p.                  | $of\ purp.$     |
| अट्                | अटत्       | अटित्वा                  | अीटतुम्         |
| अद्                | अदत्       | जग्ध्वा                  | अतुम्           |
| अस् <sub>2nd</sub> | सत्        | भूत्वा                   | भवितुम्         |
| अस् <sub>4th</sub> | अस्यत्     | अमित्वा $\&\mathrm{e}$ . | असितुम्         |
| इष्                | इच्छत्     | एषित्वा &c.              | <b>ए</b> षितुम् |
| ईक्ष्              | इक्षमाण    | ं ईक्षित्वा              | ईक्षितुम्       |
| उञ्ख्              | उञ्छत्     | उञ्चित्वा                | उञ्छितुम्       |
| कथ्                | कथयत्      | कथयित्वा                 | कथयितुम्        |
| कम्प्              | कम्पमान    | कम्पित्वा                | कम्पितुम्       |
| काश्               | काशमान     | काशित्वा                 | काशितुम्        |
| कुप्               | कुप्यत्    | कोपित्वा                 | कोपितुम्        |
| कुम्               | कुस्यत्    | कोसित्वा                 | कोसितुम्        |
| कु े               | कुवेत् &c. | कृत्वा                   | कर्तम्          |
| कृष्               | कृषत्      | ऋष्ट्रा                  | कर्ष्ट्रम् &c.  |
| क्षम्              | क्षममाण    | क्षमित्वा &c.            | क्षमितुम् &c.   |
| क्षिप्             | क्षिपत्    | क्षिप्त्वा               | क्षेप्रुम्      |
| खन् <sup>`</sup>   | खनत्       | खात्वा $\&_{	exttt{C}}.$ | खातुम्          |
| गण्                | गणयत्      | गणियत्वा                 | • गणायितुम्     |
| गम्                | गच्छत्     | गत्वा                    | गन्तुम्         |

| Roots.          | Present.             | Inde.          | Infl.           |
|-----------------|----------------------|----------------|-----------------|
|                 | act. p.              | past. p.       | of purp.        |
| घुष्            | घोषयत्               | घे।षियत्वा     | घोषयितुम्       |
| चर्             | चरत्                 | चरित्वा        | चरितुम्         |
| जि              | जयत्                 | जित्वा         | जेतुम्          |
| जीव्            | जीवत्                | जीवित्वा       | जीवितुम्        |
| डी <sup>`</sup> | डयमान                | डियत्वा        | डयितुम्         |
| तुद् .          | तुदत्                | तुत्वा         | तोत्तुम्        |
| तुष्            | तुष्यत्              | तुष्ट्रा       | तोष्ट्रम्       |
| त्यज्           | त्यजत्               | त्यक्त्वा      | त्यक्तुम्       |
| दह्             | दहत्                 | दग्ध्वा        | दर्धुम्         |
| दा .            | य च्छत्              | द्रवा          | दातुम्          |
| दिश्            | दिशत्                | दिष्ट्वा       | देष्टुम्        |
| दश्             | प्रयत्               | दृष्ट्वा       | द्रष्टुम्       |
| द्युत्          | द्योतमा <b>न</b>     | द्योतित्वा &c. | <b>चोतितुम्</b> |
| धाव्            | धावत्                | धावित्वा       | <b>धावितुम्</b> |
| नम्             | नमत्                 | नत्वा          | नन्तुम्         |
| नश्             | नश्यत्               | निशत्वा &c.    | नशितुम् &c.     |
| नी े            | नयत्                 | नीत्त्रा       | नेतुम्          |
| नृत्            | <b>नृ</b> त्यत्      | नर्तित्वा      | नर्तितुम्       |
| पच्             | . पचत् &c.           | पक्त्वा        | <b>प</b> क्तुम् |
| पत्             | पतत्                 | पतित्वा        | पतितुम्         |
| पा              | पिबत्                | पीत्वा         | पातुम्          |
| पुष्            | <sup>.</sup> पुष्यत् | पुष्ट्रा       | पोष्टुम्        |
| प्रच्छ्         | पृच्छत्              | l L            | प्रष्टुम्       |
|                 |                      |                |                 |

| Roots.       | Present.            | Inde.                | Infi.               |
|--------------|---------------------|----------------------|---------------------|
|              | act. p.             | past p.              | of purp.            |
| बुध्-        | बोधत् etc.          | बेाधित्वा            | बोधितुम्            |
| भाष्         | भाषमाण              | भाषित्वा             | भाषितुम्            |
| मू ·         | भवत्                | भूत्वा               | भवितुम्             |
| अम्          | भ्रमत् etc.         | भ्रमित्वा etc.       | <del>अ</del> मितुम् |
| मन्          | मन्यमान             | मत्त्रा              | मन्तुम्             |
| मुह्         | मुह्यत्             | मोहित्वा etc.        | मोहितुम् ६.६.       |
| यज्          | यजत्                | इष्ट्रा              | यष्टुम्             |
| याच्         | याचमान $_{ m etc.}$ | याचित्वा             | याचितुम्            |
| रक्ष्        | रक्षत्              | रक्षित्वा            | रक्षितुम्           |
| रभ्—आ        | आरभमाण              | रब्ध्वा              | आरब्धुम्            |
| <b>ल</b> भ्  | <i>ल्</i> भमान      | ल्ब्स्वा             | <b>ऌ</b> ञ्धुम्     |
| लुट्         | लुट्यत्             | लोटित्वा             | <b>लोटितुम्</b>     |
| <b>छ</b> भ्  | <b>लुंभ्यत्</b>     | लोभित्वा etc.        | लोभितुम्            |
| वद्          | वदत्                | उदित्वा              | वदितुम्             |
| वन्द्        | वन्दमान             | वन्दित्वा            | वन्दितुम्           |
| वस्          | वसत्                | <b>उ</b> षित्वा      | व्स्तुम्            |
| वह्          | वहत्                | ্ৰুৱা                | वोदुम्              |
| विद्         | विन्दमान etc.       | वेत्वा et <b>c</b> . | वेत्तुम्            |
| विश्         | विशत्               | विष्ट्वा             | वेष्टुम्            |
| <b>बृ</b> त् | वर्तमान             | वर्तित्वा            | वर्तितुम्           |
| शंस्         | शंसत्               | शंसित्वा             | श्रम्तुम्           |
| शास्         | शासत्               | शापित्वा ${ m etc.}$ | <b>स</b> ासितुम्    |
| शुष्         | शुप्यत्             | शुष्ट्रा             | श्रोष्टुम्          |

| Roots. | Present.  | Inde.          | Infi.            |
|--------|-----------|----------------|------------------|
|        | act. p.   | past. p.       | of purp.         |
| श्रम्  | श्राम्यत् | श्रमित्वा etc. | श्रमितुम्        |
| श्रु   | शृण्वत्   | श्रुत्वा       | श्रोतुम्         |
| सह्    | सहमान     | सोद्वा etc.    | सोडुम् etc.      |
| सिच्   | सिश्चत्   | सिक्त्वा       | सेक्तुम्         |
| स्     | सरत्      | सृत्वा         | सर्त्म्          |
| सृज्   | सृजत्     | सृष्ट्रा       | स्रपृम्          |
| सेव्   | सेवमान    | सेवित्वा       | सेवितुम्         |
| स्था   | तिष्ठत्   | स्थित्वा       | स्थातुम्         |
| स्पृश् | स्पृशत्   | स्पृष्ट्वा     | स्प्रष्टुम् etc. |
| स्मृ   | स्मरत्    | स्मृत्वा       | स्मृतुम्         |
| ह्     | हरत्      | हृत्वा         | हर्तुम् ।        |

# Students should learn by heart the following terminations:—

Present Terminations

| Englighter | Parasm | aipa | da. |
|------------|--------|------|-----|
|------------|--------|------|-----|

Atmanaipada

| 1st. मि              | वस्   | मस्     | इस    | बहे     | महे     |
|----------------------|-------|---------|-------|---------|---------|
| 2nd. सि              | थस्   | थ       |       | इथे     | ध्वे    |
| 3rd. ति              | तस्   | अन्ति । |       | इत      | अन्ते.  |
|                      |       | Imperi  | iect  |         |         |
| <sub>1st.</sub> अम्  | व     | म       | इ     | वाहि    | माहि    |
| 2nd. स्              | तम्   | त       | थास्  | इथाम्   | ध्वम्   |
| 3rd. त्              | ताम्  | अन्     | त     | इताम्   | अन्तः   |
|                      |       | Impera  | tive. |         |         |
| 1st. आनि             | आव    | आम      | ऐ     | आवहै    | आमहे.   |
| 2nd. <i>none</i>     | तम्   | त       | स्व   | इथाम्   | ध्वम्   |
| 3rd. दु              | ताम्  | अन्तु । | ताम्  | इर्ताम् | अन्ताम् |
| Potential.           |       |         |       |         |         |
| <sub>1st.</sub> ईयम् | ईव    | ईम      | इय    | ईविह    | ईमहि    |
| 2nd. ईस्             | इतम्  | इत      | ईथाः  | ईयाथाम् | ईध्वम्  |
| 3rd. ईत्             | ईताम् | इयु:    | इत    | ईयाताम् | ईरन्.   |

#### Render into Sanskrit:

The farmer having seen the jackal in the garden threw a stick at him.

Having so said, opened the door and went out.

Trembling and tottering she entered the palace.

A traveller saw a large burning forest.

Placing the goat on the ground he looked upwards.

Having purchased a goat, having placed it on his shoulder he was walking slowly on the road.

Having heard these words, having placed it on the ground, having repeatedly examined it, having satisfied himself that it was not a dog, having again placed it on his shoulder, he proceeded homewards.

Running hither and thither he came upon a grove of trees. They saw a large caravan crossing a river.

The youth being attracted by desire of gain, left his family and departed to country.